१५६६-६६

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्याय स. ध. विद्यालय

"प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल,
प्रबल आत्मविश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता, एवं
निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति का अर्जन कर,
अपने जीवन को निस्पृह भाव से
भारत मां के चरणों में अर्पित करना ही
हमारा परम साध्य है ।"

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर–पत्रिका, वर्ष १९७६–७७

मातृ – स्तवन

सुता हिन्दमातर्वयं ते पदाब्जे,
सनम्रं प्रकुर्मः प्रणामाञ्जलिम् ।
त्वया वर्धितास्ते हि सेवां विधातुम्,
स्व सर्वस्वमप्यर्पयामो बलिम् ।।१।।

तवासन् सुपुत्राः पुरा यैरुदग्रम्,
यशस्ते भृशम् वर्धितं भूतले,
विलुप्तं हि दैवात्तदुज्जीवयामो,
विलम्बो मनाक् सह्यतां वत्सले ।।२।।

पटालम्ब दोषाद् विनष्टं स्वमोजस्,
तपोभिस्समिद्धं विदध्यो भृशम् ।
समुद्धृय दैन्यं पुनस्ते जयामो,
स्वशस्त्रं स्वशास्त्रं तथा चानिशम् ।।३।।

अनुक्रम

क्रमांक	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
१.	अपनी बात	सम्पादक	३
२.	मौन बनो मत मेरे जीवन	श्री ज्ञानेन्द्र शर्मा	४
३.	काव्य प्रतियोगिता (प्रथम पुरस्कृत)	आनन्द शर्मा, दशम् 'क'	५
४.	हर कदम है प्रगति के लिये साथियों (द्वि. पु.)	अरविन्द तिवारी, नवम्	६
५.	हर कदम है प्रगति के लिए साथियों (तृ. पु.)	धर्मवीर, नवम् 'क'	७
६.	ऋतुओं की रानी	पंकज, दशम् 'क'	८
७.	सूत्राधार	श्री ओम् शंकर	९
८.	मन्दोदरी–मानस की आदर्श पात्र	संजय श्रीवास्तव, नवम् 'क'	१४
९.	खण्ड काव्य की कसौटी पर सुदामा चरित	नवनीत अग्रवाल, नवम् 'क'	१६
१०.	मेरी एलोरा एवं अजंता यात्रा	सुधीर सिंह, नवम् 'क'	२०
११.	प्रयोगात्मक भौतिक शास्त्र डा. जे. सी. बोस	रमेश कुमार, दशम् 'क'	२२
१२.	प्लास्टिक का महत्वपूर्ण योगदान	संजय चक्रवर्ती, नवम् 'क'	२३
१३.	मानव निर्मित भू–उपग्रह	अचल कुमार, दशम् 'ख'	२५
१४.	प्राकृतिक आभूषण– बाल'	पंकज, दशम् 'क'	२७
१५.	कथा प्रतियोगिता (प्रथम स्थान)	संजय गर्ग, दशम् 'क'	२८
१६.	नमक का ऋण	अरविन्द तिवारी, नवम् 'क'	३०
१७.	वार्षिक आख्या	प्राचार्य	३२
१८.	१९७७ की हाई स्कूल परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले छात्र	—	३५

अपनी बात

अपनों के प्रति

नीराजन का चतुर्थ पुष्प। जाने कितने झंझाओं को झेलकर म्लान, विक्षत और कुछ-कुछ रुक्ष भी। कारण हमारे पाठक बन्धुओं को ज्ञात ही है। सारा देश ही विगत २२ महीने तक किसी गहनतम में भटक रहा था; फिर हम नीराजक इससे अछूते कैसे रह सकते थे? अभी-अभी ११ अप्रैल, १९७७ को हम कांग्रेस सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबंध से मुक्त हो पाये हैं। 'नीराजकों से' शीर्षक के अन्तर्गत अपना प्रेरक संदेश देने वाले हमारे आदर्श प्राचार्य श्री चन्द्रपाल सिंह जी उसी 'दुःशासन' की चपेट में अपने परिवार से अलग कर दिये गये। हमने प्रयास किया कि उनका संदेश पुनः प्राप्त हो जाये; किन्तु समयाभाव ने हमको सफल नहीं होने दिया। अस्तु अपने उपास्य के श्री चरणों में अपना विनत निवेदन करते हुये आप सबसे सहानुभूतिपूर्ण सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

अपने उपास्य के प्रति

श्रद्धेय !

सत्ता लोलुप 'दुःशासन' की दुस्सह चोटों से पिचकी थाली, पंञ्चपात्र और पंचारती, दमन के 'अनुशासन' में कुम्हलाये पूजा-प्रसून, मदान्धता की क्रूर दृष्टि में भुलसे हुये अक्षत-चन्दन और कलुषित इरादों के निर्मम प्रहारों से जर्जर हम नीराजक आज पाँचवी बार तुम्हारा नीराजन करने आये हैं।

अजात-शत्रु !

तुमने सदा इस समग्र भारत-देश को ही अपना घर माना था। हर देशवासी का दुख-दर्द तुम्हारी अपनी कसक थी। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम" के उद्घोषक तथा 'चरैवेति-चरैवेति' के दृढ़ पालक ही आदर्शों पर तो हम चल रहे थे। फिर भी न जानें क्यों तुम्हारी ही जीवन शैली पर ढला हुआ हमारा चरित्र, अनुशासन और समाजोन्मुखी मनोवृत्ति सत्ताधीशों को कड़काने लगी।

दृढ़व्रती !

तुम्हारे जीवन का हर आयाम और तुम्हारी चिन्तन धारा की हर बूँद हमको दृढ़ता और धैर्य की ही प्रेरणा देती रही है। कदाचित इसीलिये इन गत झंझाओं को हमने यथाशक्ति पूरी हिम्मत से झेला है और आज संघर्षों की थकान कलेवर से भले ही प्रतीत हो रही हो; किन्तु नीराजन करते हुये हमारे चरण यत्किञ्चित भी डगमगा नहीं रहे।

विषपायी !

तुमने जीवन भर हलाहल पीकर अपने इष्ट देवता राष्ट्र को जीवन-दायी अमृत ही प्रदान किया है और तुम्हारी ही प्रेरणा से आज हम फिर संकल्प करते हैं कि :–

"जब तक शेष एक भी दम है
है अविशिष्ट एक भी धड़कन
सदा आत्म - गौरव से ऊँची
पलके ऊँचा सिर ऊँचा मन"

———

मौन बनो मत मेरे जीवन

—ज्ञानेन्द्र शर्मा

मौन बनो मत मेरे जीवन, कुछ तो मुखरित होना होगा,
क्षण जो एक मिला हँस लो प्रिय, आगे भी तो रोना होगा
मौन बनो मत मेरे जीवन ।

खोलो नयन आज फिर देखो, छोड़ निशा की बन्द खुमारी,
मौन जगें कुछ गीत, निराशा की संसृति के मौन पुजारी !
यह भी तेरा देश क्यों बने फिरते हो इस ओर बिराने,
अनगिन परदेशी भी इसमें हो जाते जाने पहचाने,
यह तो तेरा धाम यहाँ पर बीज सृजन के बोना होगा ।।१।।
मौन बनो मत..... .....

क्यों कहते निष्पन्द न जाने कितनी तो हलचल होती है ।
नित श्रम-बिन्दु सजा धरती पर मौन अमावास ढल सोती है,
चल - पलनों में मधुर लोरियाँ सुनकर सागर श्रम खोता है,
चिर अतीत का दुखियारा पर्वत भी दिन में ही रोता है,
उसको भी तो कभी प्रमन हो पाप धरा के धोना होगा ।।२।।
मौन बनो मत.....

तुम तो अँधियारी रातों में भी नव राग सजा लेते हो,
अतुल वेदना के अन्तर में भी अनुराग जगा देते हो,
पर उससे भी क्या पूछा है जो दिन रात जला करता है,
किन्तु निशाकर उसी तपन में ही चुपचाप पला करता है,
सोमकला के लिये सदा ही दिन कर को ही जलना होगा ।।३।।
मौन बनों मत.....

तुम अनजान पथिक इस मग के सूने पथ में बढ़ आये हो,
अब तो आगे ही चलना है पीछे का पग तज आये हो,
व्यक्त ग्रहण कैसे कर लोगे अब तो नव निर्माण करो तुम,
पहचानों पौरुष अपना कायरता का निर्वाण करो तुम,
अब तो हिचको मत मेरे जीवन काँटों पर भी चलना होगा ।।४।।
मौन बनो मत.....

मुखर बनो संगीत भरो अलसाये जग के मृत कुहरों में,
फिर से जीवन राग सजाओ संझा के ढलते पहरों में,
तुम ही फिर संदेश बनों विधि के विधान के दिव्य चिरंतन,
फिर पथ बन जाओ पंथी फिर राह मनुजता लखे अकिंचन,
मत सोचो उठ पड़ो तुम्हें ही अब फिर से पथ देना होगा ।।५।।
मौन बनों मत.....

विद्यालय के स्वप्नद्रष्टा

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य श्री गुरू जी

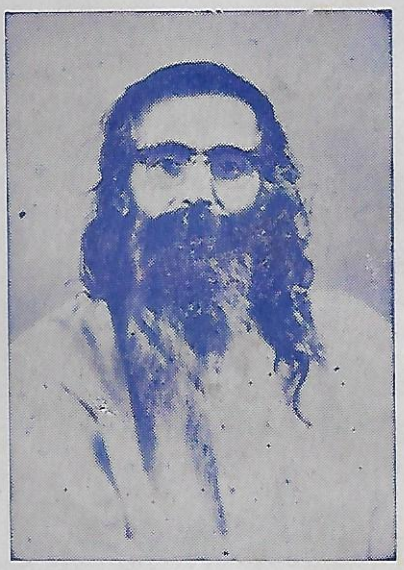

आपकी !
सुखद स्मृतियाँ ! संजोए
बढ़ रहे थे हम ।
अचानक ! काल की भृकुटी तनी
कुछ थम गये थे हम ।
क्या क्या हुआ ! क्या क्या सहा !!
क्या क्या गया ! क्या क्या रहा !!
क्या आप से कुछ छिपा है ?
या छिप सकेगा ।
पर ! आज जब अन्याय की
वह कालिमा सब छँट गई है ।
आपकी स्मृति पुनः संबल बने,
वह स्वर्ण बेला आ गई है ।।

विद्यालय की संस्थापिका

श्रद्धेया सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह उपाख्या 'बूजी'

कीर्ति शेषा ! लो नमन

श्रद्धा - सुमन

वन्दन हमारा आज फिर स्वीकार कर लो

चिर अभीप्सित कामना सम्भावना बन आ रही है

चल रहे हम अडिग व्रत लेकर तुम्हारा

दयामयि ! विश्वास कर लो

कीर्ति शेषा..... ।

काव्य प्रतियोगिता (प्रथम पुरस्कृत)

—आनन्द शर्मा, दशम क

हर कदम है प्रगति के लिये साथियों,
हम बढ़ें चाल अपनी सम्हाले हुए।
सामने शूल हों पथ को रोके हुए,
तो चलें पाव अपने सम्हाले हुए ।। १ ।।

हम अगर छोड़ देंगे ये साहस ही–यों,
तो प्रगति का सही मार्ग हट जायेगा।
हर तरफ भर उठेगा अँधेरा घना,
आत्मविश्वास का घर उजड़ जायेगा ।। २ ।।

जायेगा पर हमारा न साहस कहीं,
वह हृदय की गहन पर्त भीतर छिपा।
दुश्मनों ने हटाई हैं पर्तें अगर,
हम धधक कर जलें शक्ति संबल लिये ।। ३ ।।

अब न पीछे हटेंगे सही मार्ग से,
मिल गया है प्रगति का सही रास्ता।
लक्ष्य से जब हमारी नजर मिल गयी,
और चीजों से हमको है क्या वास्ता ।। ४ ।।

वास्ता ही नहीं तो कदम बढ़ चलें,
अपने पथ पर बिना हिचकिचाते हुए।
स्वेद की बूँद ढुलकें ढुलकती रहें,
कार्य करते रहें मुस्कराते हुए ।। ५ ।।

हर कदम लक्ष्य पथ पर बढ़े साथियों।
राह कटती रहे गुन गुनाते हुए ।।

काव्य प्रतियोगिता – द्वितीय पुरस्कृत

"हर कदम है प्रगति के लिये साथियों"

–अरविंद तिवारी, नवम

हर कदम है प्रगति के लिये साथियों,
हम बढ़ें चाल अपनी सम्हाले हुये।
राष्ट्र का उन्नयन गर्व करना हमें,
तो बढ़ें कर में अपने तिरंगा लिये ।।

देश मांगे अगर खून अपना भी तो,
दें उसे प्यार से मुस्कराते हुये।
चाहे तूफान ही क्यों न हो सामने,
हम बढ़ें उसको जड़ से मिटाते हुये ।।

सो रहा हो अगर इंसान इस देश का,
हम चलें उसको फिर–फिर जगाते हुये।
चाहे चलती रहें गोलियां सामने,
पर बढ़ें दुश्मनों को मिटाते हुये ।।

हो जहां भी खड़ा शत्रु बन सामने,
मंजिलों से झरें आग की गोलियां।
डर नहीं पुत्र हम हिन्द के हैं तथा,
आते कंधे से कंधा मिलाते हुये ।।

———

काव्य प्रतियोगिता—तृतीय पुरस्कृत

हर कदम है प्रगति के लिये साथियों !

धर्मवीर, 'नवम क'

हर कदम है प्रगति के लिये साथियों,
हम बढ़े चाल अपनी सम्हाले हुये।
हर तरफ यदि कष्ट जाल डाले हों,
तो हमारी भी कर–छुरी तेज हो।
हम सफल हों न हों इसकी चिंता नहीं,
हम चलेंगे बिना डगमगाते हुये।
मार्ग चाहे हो तलवार या भाला ही,
हम चले राह पर ढाल बनते हुये।
टूट जायेंगे कष्ट सभी राह के,
धैर्य बढ़ कर चलेगा अगर सामने।
राह विकराल हैं कुछ सरल हैं नही,
पर मैं नर हूँ, बढ़ा हूँ, मुड़ूँगा नहीं।
राह पर लोभ ममता रहेगी नहीं,
यदि चलें हम दिल को सुदृढ़ बनाते हुये।
रात दिन थमेंगे हमारे लिये,
जब चलेंगे सभी कुछ लुटाते हुये।

———

ऋतुओं की रानी

– 'पंकज', दशम (क)

तपती धरती
जलती रेत

पीड़ित हैं पत्ते
गुमसुम हैं पेड़
शान्त हो गयी हैं मुंडेरे,
खेत हो गये हैं व्याकुल
सब प्रतीक्षा कर रहे जिसकी,
वह है ऋतुओं की रानी।

फैली हुई दूर तक,
मखमल सी हरियाली
नाच रहे हैं पक्षी गण
झूम रही वृक्षों की डाली।
लाती है जो जीवन में मस्ती
वह है ऋतुओं की रानी।

नदियां फिर उमड़ पड़ती
मन में लिये उमंग
सिंधु यों हिलोरे मारता
जैसे उसने पी हो भंग
सूखे होठों पर लाती
है जो फिर से लाली

वह है ऋतुओं की रानी।

सूत्रधार

—ओम शंकर

दृश्य– १

[**स्थान :** तक्षशिला विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र-विभाग की एक स्नातकोत्तर कक्षा।

समय– शरद्-ऋतु का पूर्वान्ह।

सभी विद्यार्थी सम्हल-सम्हल कर बैठ रहे हैं। विषयान्तर का घोष हो चुका है। किसी नवीन आचार्य के आने की प्रतीक्षा है।

उसी समय एक कृष्ण-वर्ण, प्रशस्त ललाट, श्मश्रु-विहीन मुखमण्डल, कुछ बड़े से केश, जोकि उपयुक्त रीति से सँवारे गये हैं, श्वेत धोती और कुर्ता, कंधे पर उत्तरीय, पैरों में एक विशेष प्रकार की विश्वास-युक्त-गति लिये आचार्य प्रवेश करते हैं। कक्षा विशेष रीति से सजी तथा उपस्थिति में परिपूर्ण है। कदाचित् कुछ अन्य विभागों के भी जिज्ञासु छात्र आ गये हैं। आचार्य उन सबके इस मूक अभिवादन का हाथ जोड़कर उत्तर देते हुए अपनी पीठिका पर चढ़ जाते हैं। संकेत पाते ही छात्र–समूह आसनस्थ हो जाता है। कुछ छात्र थोड़ी सी कानाफूसी भी करते हैं, कदाचित् आचार्य के रंग-रूप पर हो; किन्तु अन्य समझदार छात्र संकेत से उन्हें शान्त करते हैं। आचार्य एक बार सम्पूर्ण कक्षा पर दृष्टि-निक्षेप करते हैं। कई छात्रों की उठी हुई दृष्टियाँ दृष्टि मिलते ही झुक जाती हैं। कक्षा पूर्ण शांत है। तभी आचार्य अपने मेघ-निर्घोष स्वर में बोलना प्रारम्भ करते हैं।]

आचार्य– जिज्ञासुओ! विभागाध्यक्ष महोदय ने मेरा व्यक्तिगत परिचय आप सबको दे दिया है। इसके अतिरिक्त नित्यनियमित सम्पर्क ही हम लोगों का परिचय-क्रम होगा। आपका व्यक्तिशः नाम पूछने से कोई लाभ नहीं। स्वाभाविक रूप से नाम स्मरण कर प्रकृति और प्रवृत्ति से भी परिचित हो जाऊँ, ऐसा प्रयास करूँगा। आज प्रथम दिन मैं आप से प्रश्न चाहता हूँ, जिनके उत्तर मैं स्वयं देने का प्रयास करूँगा। प्रश्न अपनी रुचि के अनुसार किसी भी क्षेत्र के हो सकते हैं। (इतना कह कर आचार्य पीठासीन हो जाते हैं। कुछ देर नीरव वातावरण। पुनः एक छात्र उठता है।)

छात्र– श्रीमन्! शासन का अर्थ तन्त्र किस प्रकार का होना चाहिए?

आचार्य– समाजोन्मुखी।

दूसरा छात्र– और शासनानुवर्ती, आचार्य प्रवर!

आचार्य– नहीं लोकानुवर्ती, शुभ!

(आचार्य की प्रगल्भता एवं बौद्धिक विश्वास पर मुग्ध होकर एक विचार शील छात्र बोलता है।)

छात्र– गुरुवर! (सम्बोधन सुनते ही आचार्य झंकृत से होकर सम्हल कर सुनने लगते हैं।) आपके ये दो संक्षिप्त किन्तु अर्थ-गर्भित शब्द 'समाजोन्मुखी एवं लोकानुवर्ती' क्या केवल बौद्धिक कल्पना की ही प्रतिकृति नहीं है? (आगे बोलता हुआ हाथ जोड़ कर) क्षमा करें। आज के अपने इस विलासमय शासन–तन्त्र और निरीह समाज जीवन पर श्रीमान् के ये शब्द लागू होते हैं?

आचार्य– (उसी गम्भीरता तथा विशेष स्नेह के साथ) न हों वत्स! किन्तु क्या हम शाश्वत सत्य को भी काल की मलिन पर्तों से ढक देंगे?

छात्र– (कुछ उलझता हुआ) पूज्यवर! ये सिद्धान्त और शाश्वत सत्य क्या मात्र चिन्तन के ही विषय हैं? व्यवहार में इनका कुछ भी स्थान नहीं?

आचार्य– है वत्स! किन्तु·····

(विषयान्तर का घोष होता है। आचार्य अपने आसन से उठते हुए) इसका स्पष्टीकरण समय आने पर पुनः होगा।

दृश्य –२

(विश्वविद्यालय का विस्तृत प्रांगण प्रशस्त मार्गों एवं नाना प्रकार के वृक्ष-वल्लरियों से परिपूर्ण है। सजी-सँवरी क्यारियाँ स्थान-स्थान पर बड़ी चित्ताकर्षक लग रही हैं। ऐसे ही एक विस्तृत क्षेत्र में दो नवयुवक कुछ विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

प्रथम– आचार्य लगते तो विद्वान हैं; परन्तु वाह्य व्यक्तित्व कुछ आकर्षक नहीं है।

द्वितीय– वाह्य व्यक्तित्व से तुम्हारा तात्पर्य उनके वर्ण और मुखाकृति से ही है न।

प्रथम– और क्या ? प्रथम प्रभाव तो उसका ही पड़ता है, विद्वत्ता तो बाद में प्रकट होती है। (कुछ हँसकर) और तुमने पता नहीं किस भावावेश में उस दिन उनको 'गुरुदेव' का संबोधन दे दिया।

द्वितीय– (गम्भीर होकर) आयु के साथ-साथ तुम्हारी बुद्धि नही चल पा रही है सिंहरण ! तुम व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके वाह्याकार से आंकते हो। उसकी मेधा, उसकी अंतः - शक्तियाँ, उसकी प्रकृति और उसका अंतः -दर्शन सभी कुछ तुम्हारे लिये नगण्य है। (कुछ रुक कर) तनिक ध्यान करो सिंहरण ! उनका वह कृष्ण वर्ण भी ज्ञान की प्रचण्ड अग्नि में तप्त स्वर्ण की भाँति तेजस्वी लग रहा था। उनके वह सारगर्भित·····

(वाक्य पूरा होने के पहले ही किसी के पदचाप से उनका ध्यान भंग हो जाता है। अप्रत्याशित रूप से आचार्य को देखकर दोनों खड़े होकर अभिवादन करते हैं।)

दोनों– (हाथ जोड़कर) प्रणाम आचार्यवर।

आचार्य– धीमान् भव। शुभास्ते पन्थानः।

सिंहरण– (विनम्रता से) इधर कैसे आ गये आचार्यवर।

आचार्य– क्यों क्या इधर आना वर्जित है ?

प्रथम शिष्य– (और विनम्र होकर) वर्जित नहीं आचार्यवर ! इनके कहने का तात्पर्य था कि इधर तो केवल छात्र ही आते हैं। आचार्यगण तो अपने विचरणार्थ पुष्करिणी की ओर ही जाया करते हैं। इसलिये आपको अनायास देखकर इन्हें कुछ जिज्ञासा हुई।

आचार्य– पुष्करिणी क्षेत्र मनः-तोषदायी हो सकता है शुभ! किन्तु उस क्षेत्र में बौद्धिक शान्ति नहीं मिलती है। एकाधबार उधर भी गया हूँ।

प्रथम– बौद्धिक शान्ति ? (कुछ रुक कर) बौद्धिक शांति तो उधर अधिक मिलती होगी आचार्यवर ! क्योंकि उधर ही तो विविध विषयों के प्रकाण्ड अध्येता और अधिकारी आचार्य विचरण करने के लिये जाते हैं।

आचार्य– (कुछ हँसकर) विविध विषयों के आचार्य, अध्येता और मननकर्ता उधर अवश्य जाते हैं; किन्तु····· किन्तु मुझे वहां ऐसा लगा कि वे सब प्राणहीन ज्ञान-सम्पन्न बौद्धिक वाद्य यन्त्र हैं ; जिन्हें छेड़ दो तो एक ही जानी पहचानी आवाज सुनाई पड़ने लगती है।

(दोनों साश्चर्य सुनते रहते हैं)

और मैं खोजा करता हूँ, वे जीवन जिनकी विचारधारा, जिनकी विचार-शैली और जिनकी कर्मशक्ति मौलिक, अप्रतिम और असीम हो। क्योंकि आज की परिस्थतियाँ बुद्धिवीर नहीं कर्मवीर चाहती हैं।

(कुछ ठहरकर तथा हँसते हुए से)

अच्छा मैं बहुत बोल गया। वैसे ही कक्षा में बहुत बोला करता हूँ। अब बताओ तुम लोग इधर क्या परामर्श कर रहे थे।

(दोनों– अभी तक मंत्र-मुग्ध से आचार्य की वाणी सुनते हुए कुछ चौंककर)

प्रथम– गुरुवर ! ऐसे ही टहलने चले आये थे। कुछ आज के विषयों पर संक्षिप्त विचार भी प्रारम्भ हो गया था।

आचार्य– (बीच में ही) आज तुमने पुन मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति को गुरुदेव कह कर स्तंभित कर दिया है चन्द्रगुप्त ! तुम्हारा प्रथम दिवस का सम्बोधन मुझे आज

भी झंकृत कर देता है और आज पुनः। (कुछ रुककर) क्या सचमुच तुम्हारे अन्तःकरण से स्फूर्त यह सम्बोधन है अथवा मेरे पर व्यंग्य ?

चन्द्रगुप्त– (गम्भीर होकर और साश्चर्य) व्यंग्य ? आपसे व्यंग्य ? यह क्या कह रहे हैं गुरुवर ! आपसे तो मिथ्या भाषण का साहस कदापि नहीं कर सकता। पता नहीं कौन सा अमिट प्रभाव आपके उस प्रथम दर्शन और वाणी ने मेरे ऊपर डाला है कि ऐसा लगता है मानों आप ही मेरे भावी जीवन के पथ-प्रदर्शक हों।

(विह्वल होकर चरणों की ओर झुकता है, आचार्य बीच में ही उठा लेते हैं और हृदय से लगाते है। सिंहरण स्तंभित सा देखता रहता है।

पट–परिवर्तन

दृश्य–३

(आचार्य चाणक्य का निजी निवसा-स्थान। सादा किन्तु भव्य। सामने हरीतिमा मंडित एक उद्यान है। उसी में आचार्य प्रवर टहल रहे हैं।)

चाणक्य– (स्वगत) लगभग दो वर्ष पूर्ण हो चुके इस विश्वविद्यालय में। इतने समय में क्या प्राप्त हुआ और क्या नष्ट हुआ, इसका हिसाब ही नहीं लग पा रहा है। मां सरस्वती का पावन मंदिर, उसके हम सभी आराधक कुछ बड़े कुछ छोटे; किन्तु इस आराधना-क्रम में वाह्य हस्तक्षेप क्यों ? (उलझ कर हाथ हिलाते हुये) पता नहीं क्यों है और आश्चर्य कि अत्यन्त ज्ञानवृद्ध प्रतिभायें उन हस्तक्षेपों को मौन मन होकर स्वीकारती हैं अनचाहे मानती भी हैं। (सहसा चन्द्रगुप्त उद्यान के फाटक पर आकर रुकता है और प्रवेश पाने की दृष्टि से आचार्य की ओर देखता है।)

चाणक्य– (प्रसन्न होकर) आओ चन्द्रगुप्त, अच्छा हुआ आ गये। एकाकी कुछ ऊबने सा लगा था।

(चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है तथा कुछ गम्भीर सा खड़ा हो जाता है।)

आचार्य– (उसकी ओर देखकर) उदास क्यों हो चन्द्रगुप्त ! इतना अधिक भावुक होना भी ठीक नहीं। सभी के विचार तो एक समान नहीं हो सकते।

(बीच में ही)

चन्द्रगुप्त– किन्तु गुरुदेव ! ऐसे विचार जो असहनीय हो जाते हैं, क्या उन पर भी प्रतिक्रिया न हो ?

चाणक्य– आखिर क्या हुआ·····?

चन्द्रगुप्त– (अत्यंत भावुक होकर) आज आपके सम्बन्ध में माननीय प्रबन्धक महोदय ने कुछ अशोभनीय बातें कही हैं।

चाणक्य– (जैसे सब जानते हुये) प्रबन्धक महोदय यानी तुम्हारा मतलब राजकुमार आंभीक से है न !

चन्द्रगुप्त– हाँ गुरुदेव !

चाणक्य– किसी का स्वभाव बदला नहीं जा सकता शुभ ! यदि कोई सर्प से यह अपेक्षा करे कि वह अमृत-वर्षा करता हुआ घूमे तो वास्तव में ऐसी अपेक्षा करने वाला ही हास्यास्पद व्यक्ति माना जायेगा।

चन्द्रगुप्त– किन्तु, माननीय प्रबंधक महोदय तो एक उत्तरदायित्व-पूर्ण महानुभाव हैं गुरुदेव !

चाणक्य– (गम्भीर होकर) हैं ; किन्तु किस विषय का उत्तरदायित्व। यही न कि केवल तक्षशिला जैसा विशाल विश्वविद्यालय उनके आधीन चलता है। अनेक मेधायें उनकी लक्ष्मी के सम्मुख नत हैं और उनको एक अनचाहे सम्मान की प्राप्ति लगातार हो रही है। (धीरे-धीरे कुछ उत्तेजित से होकर भावावेश में) आज सम्पूर्ण देश पतन की कगार पर खड़ा है और उनको धक्का देने का कार्य आंभीक जैसे देशद्रोही करने में रत हैं और इन विषधरों की अवमानना करने की सामर्थ्य किसी में नहीं, आश्चर्य यह है।

(चन्द्रगुप्त आश्चर्य के साथ सहमे नेत्रों से चाणक्य की ओर देखता रहता है।)

चाणक्य– (उसी आवेश में) यह अमृतमयी पयस्विनियाँ विषाक्त होंगी, गगनचुम्बी शैलशिखर अपमान से झुक

जायेंगे। महोदधि चीत्कार कर उठेगा और भारत माँ अपने इन कपूतों के कृत्यों पर उतना पीड़ित न होगी, जितना हम तथाकथित सपूतों की उदासीनता और जड़ता पर।

(सहसा अपने कक्ष में चले जाते हैं। चन्द्रगुप्त भी पीछे-पीछे जाता है।)

पटाक्षेप

दृश्य –४

(विश्वविद्यालय के अर्थ-विभाग का एक कक्ष। सभी प्रमुख आचार्य और कुलपति महोदय के सहित प्रमुख आसन पर अभिमानपूर्ण मुद्रा में आंभीक बैठा है। गोलाकार रखी हुई आसंदियों में से एक आसन्दी पर आचार्य चाणक्य भी विराजमान हैं।)

(नीरव वातावरण)

आंभीक– (चाणक्य की ओर संकेत करके) आचार्य चाणक्य ! क्या यह सत्य है कि आपने प्रबंध समिति के सम्माननीय सदस्यों एवं स्वयं मेरी अवमानना छात्रों के समक्ष की है ?

चाणक्य– (शान्तमुद्रा में) नहीं।

आंभीक– क्या आप मिथ्या भाषण करके अपने दोषों को छिपाना नहीं चाहते ?

चाणक्य– कदापि नहीं।

आंभीक– (उत्तेजित होकर) आप नहीं नहीं कह कर बचना चाहते हैं ?

चाणक्य– (सुनते ही खड़े होकर) प्रबन्धक महोदय ! दर्प मनुष्य को अंधा बना देता है। मैंने आपकी नहीं आपके कार्यों की निन्दा की है। केवल छात्रों के समक्ष ही नहीं समाज के प्रत्येक पक्ष के सम्मुख रखने का प्रयास किया है, कर रहा हूँ, करूँगा। (कुछ रुककर आगे बोलते हुये)

मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या यह सच नहीं कि यूनान से चली सिकन्दर की सेना केवल आपके पत्र के आधार पर ही इस देश की ओर बढ़ रही है ?

क्या यह सच नही कि आपने समीपवर्ती क्षेत्रों में जनता में यह प्रचार किया है कि सिकन्दर महान् है, उसका स्वागत करो ? क्या यह सच नही है कि आपकी आदरणीया भगिनी और पूज्य पिता आपके कृत्यों से क्षुब्ध हैं और आप उनको दुर्बल समझ कर उनकी उपेक्षा कर रहे हैं ?

आंभीक–(कुछ शांत होकर) विष्णुगुप्तजी। आप प्राध्यापक हैं। देश-रक्षक राजा नहीं। अतः आप अपने क्षेत्र से इतर बातों की चिन्ता न करें। यह मेरा अपना निजी प्रश्न है।

चाणक्य– (जोर देकर) निजी प्रश्न ? आश्चर्य है प्रबंधक महोदय ! मैं प्राध्यापक केवल सूत्र रटाने और पेट भरने के लिये हूँ ? और देश केवल आपकी बपौती है ?

आंभीक– (कड़क कर) विष्णुगुप्त !

चाणक्य– (उसी स्वर में) आंभीक ! ध्यान रखो, यह भारत है इसमें नाग पूजा और नागदलन दोनों प्रचलित हैं।

(कई वयोवृद्ध विद्वान् चाणक्य की ओर अनेक भावों से देखते हैं। कुछ लोग उन्हें बैठाने की चेष्टा करते हैं ; किन्तु चाणक्य किसी की परवाह नहीं करते। कक्ष के पार्श्वभाग से चन्द्रगुप्त और सिंहरण सुन रहे हैं। चाणक्य अपने इस वक्तव्य के बाद अपना लिखित त्याग पत्र प्रस्तुत करते हुये उपेक्षा-भाव से)

यह लीजिये। दासता की पूर्णाहुति स्वीकार करें श्रीमन् ! अब बहुत हो चुका।

(एक झटके से बाहर हो जाता है। निकलते ही दोनों शिष्य भावुक होकर चरणों पर गिरते हैं।)

सिंहरण– भगवन् ! क्षमा करें अभी तक मैं अंधेरे में था। अब आप ही मेरे नन्दा-दीप हैं।

(आगे-आगे गुरुदेव और पीछे-पीछे शिष्य जाते है)

पटाक्षेप

दृश्य–५

(निर्जन वन में एक शिला पर आचार्य चाणक्य अपने नवीन परिधान में विराजमान हैं। इसपरिधान में उस तपः तप्त ताम्रवर्णी शरीर पर मात्र गैरिक उत्तारीय और लुंगी रह गई है। प्रसन्न मुद्रा विश्वास की दृढ़ता के साथ मानों सहयोग कर रही है। दोनों शिष्य सामान्यवेश में सामने ही थोड़ी नीची शिला पर बैठे हैं।)

आचार्य– (गम्भीर स्वर में) तुम लोग भावुकता में मेरे पीछे क्यों लगे हो शुभ ! यह काल तो तुम्हारे अध्ययन-मनन का है। इस प्रकार व्यर्थ घूमने से लोगों की निन्दा के पात्र बन सकते हो।

सिंहरण– (दृढ़ स्वर में) गुरुवर ! आपका वह पाठ हमें मोटी बुद्धि होने के कारण कदाचित् शब्दशः तो नहीं, किन्तु भावार्थ में इतना याद अवश्य है कि भावना शून्य शरीर वैसा ही है जिस प्रकार बालकों और युवकों से रहित कुटुंब और आज आप उसी भावना को तिरस्कृत कर रहे हैं भगवन् !

आचार्य– (सुनते-सुनते विभोर होकर सिंहरण को उठा लेते हैं, भावुक और प्रसन्न होकर) सिंहरण ! तुम इतने मेधा-सम्पन्न छात्र हो, इसका प्रमाण तुम्हारे वाक्यों ने कम, भावभङ्गी और भाषा ने अधिक दे दिया है। किन्तु यह साधन-पथ बड़ा कठोर है। समाज-संगठन तथा जनजागरण अत्यन्त दुरूह और कालापेक्षी कार्य हैं। इनका संकल्प सरल किन्तु सतत् कार्यान्वयन उतना ही कठिन है जितना एक विशाल वेगवती धारा को नवीन मोड़ देकर इच्छित मार्ग पर बढ़ाना। तुम लोग कब तक सहन करोगे ? प्रश्न यह है।

चन्द्रगुप्त– हम कब तक सहन करेंगे उसमें आप संदेह कर सकते हैं भगवन् ! किन्तु आपको हमारी जीवनपर्यन्त सहनशीलता में संदेह नहीं करना चाहिये। पता नहीं आज आप कैसी बातें कर रहे हैं ? जिस सुदीर्घ-पथ पर आप दृढ़ता से बढ़ रहे हैं क्या वह हम लोगों के लिये वर्जित है ? क्या इस संकट की घड़ी में भारत माँ आपको और केवल आपको ही पाकर प्रमुदित हो उठेगी ? क्या इस दावा में तिल-तिलकर जलने का अधिकार केवल आपको ही है ? हम आपके शिष्य हैं, आपसे प्रत्येक क्षेत्र में कम हैं; किन्तु क्या भारत माँ हमारे भार से मुक्त है ? हम लोग उसके वक्ष के बाहर खेल रहे हैं क्या उसके संकट हमारे लिये निर्मूल्य हैं ? (कुछ उत्तेजित होकर) यदि गुरुदेव अपने साथ रखने में अपना अपमान समझते हों तो यह चन्द्रगुप्त अकेला चलेगा और (संकेतकर) इन्हीं श्री चरणों का स्मरण, इसी प्रदीप्त मेधा की ज्योति लेकर, बढ़ेगा बढ़ता रहेगा, जब तक प्राण हैं। (भावुक होकर घूमकर चलने को उद्यत होता है, तभी गुरुदेव उसका हाथ पकड़कर पास बुला लेते हैं)

चाणक्य– (दोनों को बैठाकर गंभीर स्वर में) मेरे आशादीप ! आज मैं आश्वस्त हो गया। वास्तव में ईश्वर, सत्य और निष्ठा के साथ रहता है। उसी ने तुम दोनों को मेरे पास भेजा है यह मेरा विश्वास है। तुम मेरे साथ रहोगे, वैसे ही जैसे शरीर में प्राण रहते हैं। वस्तुत: इस नाटक का नायक और सहनायक तुम दोनों को ही बनना है। मैं तो मात्र सूत्रधार हूँ। अब सर्वप्रथम हमको निकट भविष्य के संकट से महाराज पुरु को सचेत करने चलना है।

दोनों– जैसी इच्छा गुरुदेव ! (तीनों चले जाते हैं।)

———

मन्दोदरी–मानस की आदर्श पात्र

संजय श्रीवास्तव, 'नवम क'

भारतीय संस्कृति तथा साहित्याकाश में संत कवि तुलसीदास द्वारा प्रणीत ग्रन्थ 'रामचरितमानस' अग्रगण्य है। 'मानस' के सभी पात्र अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं आदर्श विचारों से युक्त मानों अमरता को चुनौती देते से प्रतीत होते हैं। इनमें पतिव्रता सीता, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भातृ-प्रेमी भरत, राम भक्त हनुमान, लक्ष्मणादि का गुण गान ही सर्वत्र दिखाई देता है किन्तु दैत्यराज रावण की पतिपरायणा पत्नी मंदोदरी के चरित्र पर लोग दृष्टिपात नहीं करते हैं। ध्यान पूर्वक अवलोकन करने पर मन्दोदरी एक असाधारण पतिव्रता, धर्मपरायणा, लज्जाशीला, विदुषी, उपदेशिका, दूरदर्शिणी एवं नम्रता का परिधान पहने हुई एक आदर्श नारी है, जो चाहते हुए एवं जानते हुए भी अपने मदान्ध पति को उचित अनुचित का ज्ञान न करा सकी और वैधव्य का टीका माथे पर लगवाने को विवश हो गई।

लज्जा नारी का आभूषण है। मंदोदरी जब अपने पति के पास जाती है तो उसमें भी लज्जा और भारतीय संस्कृति के लक्षण परिलक्षित होते हैं।

'चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा।'

नारी का सुहाग ही उसका जीवन है। अपने सुहाग के खंडित होने की कल्पना मात्र से काँप कर ही तो वह रावण से कह उठती है –

'तुम्हहिं रघुपतहिं अन्तर कैसा।
खलुखद्योत दिनकरहिं जैसा॥'

रावण से और विनती करती है–

'सजल नयन कह जुग कर जोरी,
सुनहुँ प्रानपति बिनती मोरी।
कंत राम विरोध परिहरहू,
जानि मनुज जनि हठ मन धरहू।

रावण कुछ भी नहीं सुनता तो मन्दोदरी अपने अहिवात की दुहाई देती है। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है–

'अस बिचारि सुनु प्रानपति,
प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद,
मम अहिवात न जाइ॥'
'अस कहि नयन नीर भरि,
गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहिं,
अचल होई अहिवात॥

प्रत्येक नारी को पति सबसे प्रिय होता है। मन्दोदरी यद्यपि जानती है कि रावण श्री राम के साथ बैर कर उचित नहीं कर रहा है किन्तु रावण के मरने पर मन्दोदरी पति-वियोग पर एक अत्यन्त साधारण नारी के समान विह्वल हो उठती है। वह अपने को सोने की लंका एवं लंकेश्वर की पटरानी नहीं समझती है–

'पति सिर पेखत मन्दोदरी।
मुरुछित विकल धरनि खसिपरी॥
जुबति बृन्द रोवत उठि धाई।
तेहि उठाइ रावण पँह आई॥
पति गति देखि ते करहिं पुकारा।
छूटे कच नहिं वपुष संभारा॥
उर ताड़ना करहिं विधि नाना।
रोवत करहिं प्रताप बखाना॥'

मन्दोदरी को अपने पति रावण पर गर्व था जो कि उपयुक्त ही था रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी को रावण की महत्ता ने और अधिक दुःखी कर दिया।

'तव बल नाथ डोल नित धरनी ।
तेजहीन पावक ससि तरनी ।।
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा ।।
सो तनु भूमि परेऊ भरि छारा ।।
वरुण कुबेर सुरेश समीरा ।
रन सन्मुख धरि काहु न धीरा ।।
भुजबल जितेहु काल जम साई ।
आजु परेउ अनाथ की नाई ।।
तब बस विधि प्रपंच सब नाथा ।
सभय दिसिप नित नावहिं माथा ।।'

मन्दोदरी राम से बैर करने को रावण को मना करती है रावण नहीं मानता है और मारा जाता है तभी तो मन्दोदरी कहती है ।

'अब तब सिर भुज जंबुक खाहीं ।
राम विमुख यह अनुचित नाहीं ।।'

'दूरदर्शी' मनुष्य वास्तव में कहलाने योग्य है । मन्दोदरी ऐसी ही विदुषी नारी है । मन्दोदरी युद्ध का परिणाम जानती है इसीलिये मन्दोदरी रावण से विनय पूर्वक सलाह कहती है ।

'रामहिं सौंपि जानकी, नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन, जाइ भजिय रघुनाथ ।।'

मन्दोदरी गर्व रूपी दर्पण की अस्थिरता से पूर्ण परिचित है । रावण गर्व के झूठे दर्पण में अपनी स्थिर प्रतिमा के दर्शन करता है । मन्दोदरी पति-हित के लिए पति को सुपथगामी बनाने का, उचित अनुचित समझाने का अथक प्रयास करती है किन्तु अन्त में यह समझ लेती है कि दुर्दिन में मनुष्य की मति फिर ही जाती है ।

———

'खण्ड काव्य की कसौटी पर सुदामा चरित्र'

—नवनीत अग्रवाल 'नवम क'

नरोत्तमदास कृत सुदामाचरित्र कुछ ऐसे विशिष्ठ ग्रन्थों की श्रेणी के अन्तर्गत गिना जा सकता है, जिनका अस्तित्व नगण्य काव्य सौष्ठव तथा स्वल्प कथानक के साथ ही अपने में सर्वथापूर्ण है। सुदामाचरित का पाठन यह स्पष्ट करता है कि नरोत्तमदास कलात्मकता के चाकचिक्य से कोसों दूर विशुद्ध भावात्मता के पुजारी हैं। यदि एक ओर यह कहा जाय कि इस रचना में कला की अपेक्षा के कारण कुछ रिक्तता सी आ गयी है तो दूसरी ओर यह कहना भी आवश्यक हो जायेगा कि इस कला सम्बन्धी रिक्तता की पूर्ति भावों की मार्मिकता ने अनायास ही कर दी है। कला की रिक्तता तथा भावों की अधिकता का ऐसा सामन्जस्य हो जाता है कि इस ग्रन्थ को सर्वथा सन्तुलित कहा जा सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि यह अपने में पूर्ण है तो इस को खण्ड काव्य कहा जाय या महाकाव्य। परन्तु यदि हम इस ग्रन्थ को प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य की दृष्टि से देखें तो यह वास्तव में एक विनोद ही होगा क्योंकि इस ग्रन्थ में जीवन के केवल एक ही पक्ष का चित्रण किया गया है, पूर्ण जीवन का नहीं। विवरण एक घटना मात्र है और उसमें सभी प्रकार के वर्णन प्राप्त नहीं होते। इस कारण यह महाकाव्य की सीमा तक पहुंच नहीं पाता। अब रहा खण्ड काव्य का प्रश्न। इस दृष्टि से इसका तर्क पूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा।

खण्डकाव्य वास्तव में किसी घटना को लेकर लिखा जाता है जब कि महाकाव्य में जीवन की पूर्णता, व्यापकता तथा समग्रता का चित्रण होता है। सुदामाचरित में भी सुदामा अथवा कृष्ण के जीवन की एक घटना का ही चित्रण किया गया है और इसमें सभी वर्णनों का आग्रह नहीं है वास्तव में सुदामा तथा श्रीकृष्ण की मित्रता ही पारिवारिक तथा आर्थिक परिवेशों के मध्य अत्यन्त सफलता के साथ डकेरी गयी है। यद्यपि यह मित्रता दो विषम अवस्थाओं के मध्य की है, फिर भी उन दोनों अवस्थाओं के बीच ऐसा सामंजस्य दृष्टिगोचर होता है कि उसके बीच का अन्तर ही समाप्त हो जाता है। घोर दारिद्र्य तथा वर्णनातीत ऐश्वर्य दोनों का वर्णन कवि द्वारा जितनी सफलता तथा स्वभाविकता के साथ बन पड़ा है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि यह ग्रन्थ जीवन की एक छोटी घटना पर आधारित एक पूर्ण ग्रन्थ है और जिसे प्रायः सभी समालोचक खण्डकाव्य की ही संज्ञा देते हैं।

अब हम अपने अभिप्रेत की ओर बढ़ते हुये खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर सुदामाचरित की समीक्षा करने का प्रयास करेंगे।

बाबू गुलाबराय के अनुसार खण्डकाव्य में प्रायः एक ही छन्द का प्रयोग होना चाहिये अथवा विभिन्न छन्द एक निश्चित क्रम में होने चाहिये। सुदामाचरित में कवित्त, सवैया तथा दोहा इन तीन छन्दों का ही प्रमुखतः प्रयोग किया गया है। कुण्डलिया का केवल एक उदाहरण तथा सोरठा का भी केवल एक ही उदारहण जिसमें मंगलाचरण किया गया है, प्राप्त होता है। प्रायः कवित्त के बाद दोहा व सवैया आये हैं। यदि विषय की दृष्टि से छन्दों के प्रयोग को देखा जाय तो 'वर्णन' कवित्त में, तथा 'वाद विवाद' सवैये में प्रयुक्त हुआ है। 'दोहा छन्द' सवैया तथा कवित्त की विषय वस्तु को परस्पर जोड़ने के लिए ही प्रयोग किया गया है। इस तर्क के अनेक स्पष्टीकरण हम सुदामाचरित में पा सकते हैं, यथा—

(कवित्त)

रुपे के रुचिर थार पारुस यों तेहि बार,
जीती है जिन सोभा सरदहू के चंद की।

दूसरे पहित भात घनों सुरभी को घृत,
फूले फूले फुलका प्रफूलदुति मंद की।
.....परोसी आइ कन्द की ॥ ५७ ॥

(दोहा)

सात दिवस यहि विधि रहे, दिन प्रति आदर भाव।
चित्त चल्यौ घर चलन कौ ताको सुनौ बनाव ॥ ५८ ॥

(सवैया)

दाहिने बेद पढ़ै चतुरानन सामुहे ध्यान महेस धरौ है।
बाएँ दाऊकर जोरे लिये सब देवन पास सुरेश खरौ है।
.....चौंकि परौ है ॥ ५९ ॥

इस प्रकार यदि छंद प्रयोग पर विषय की दृष्टि से दृष्टिपात किया जाय तो ज्ञात होगा कि छन्द एक निश्चित क्रम में बँधे चलते हैं। परन्तु यदि कोई यह तथ्य स्वीकार न करे तो परिभाषा या लक्षण में 'प्रायः' शब्द तो लगा ही है और सुदामाचरित इस लक्षण का विकल्प उसी प्रकार हो सकता है जैसे स्तनधारियों में प्लैटीपस। इस विवेचन से निष्कर्ष निकलता है कि सुदामाचरित छन्दों के लक्षण के आधार पर खण्डकाव्य की क्षमता रखता है।

खण्ड काव्य के लक्षणों को लिखते लिखते 'बाबू गुलाबराय' ने एक लक्षण यह भी बताया कि खण्डकाव्य में मंगलाचरण अवश्य होना चाहिए। इस लक्षण की पुष्टि ग्रन्थ के प्रारम्भ में सोरठा छन्द में वर्णित ईश-स्तुति से हो जाती है। यथा–

गनपति कृपानिधान, विद्यावेद विवेकजुत।
देहु मोंहि वरदान, हर्ष सहित हरिगुन कहौं। /१४

यदि सुदामाचरित के कथानक पर विचार किया जाये तो ज्ञात होता है कि सुदामाचरित का कथानक 'श्रीभद्भागवत' पर आधारित है। श्रीमद्भागवत भक्ति का ग्रंथ है।कहा जाता है कि जब भगवान वेदव्यास पुराणों की रचना के पश्चात भी शांति लाभ न कर सके तो उन्होंने भागवत की रचना कर इष्ट की प्राप्ति की। यह ग्रन्थ भक्ति का इतना प्रौढ़ ग्रंथ है कि अनेक आचार्यों के इस पर भाष्य भी प्राप्त होते है। वास्तव में यह भारतीय संस्कृति का अमर परिचायक है। हिन्दुओं में तो प्रत्येक शुभ अवसर पर इसका धार्मिक पाठ भी अपेक्षित होता है। इसी महाग्रन्थ का एक कथानक लेकर नरोत्तमदास जी ने सुदामाचरित की रचना की है। अतः इसका कथानक सुपरिचित तथा सुप्रतिष्ठित है। यह लक्षण भी खण्डकाव्य का एक लक्षण माना गया है, इस कारण इस दृष्टि से सुदामाचरित खण्ड काव्य का पूर्ण रूपेण पालन करता है।

अब यदि सुदामाचरित को रस की दृष्टि से प्रस्तुत किया जाय तो इसमें विशेष रूप से श्रृंगार रस ही है,यद्यपि भिन्न-भिन्न स्थानों पर भावाभिव्यक्ति के हेतु कवि ने भिन्न-भिन्न रसों को अपनाया है। श्रृंगार रस के भेद भक्ति के अन्तर्गत सख्यरस का ही इसमें पाठक स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखता है क्योंकि अनेक स्थानों पर सख्यरस की जो अबाध धारा प्रवाहित हुई है वह अन्य रसों के सूक्ष्म या गौण प्रस्तुतीकरण के अस्तित्व को समाप्त प्राय कर देती है। सुदामा-कृष्ण-मिलन, सुदामा व कृष्ण के मनके अन्तर्द्वन्द्वों तथा विचारों के प्रकटीकरण में सख्यरस का प्रतिबिम्ब अत्यधिक स्पष्ट हो जाता है और पाठक उसी में बह सा जाता है। 'नरोत्तमदास' ग्रन्थावली के सम्पादक श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी इसमें सख्यरस ही मानते है। परन्तु उन्होंने वात्सल्यरस की भाँति ही सख्यरस को भी एक सर्वथा भिन्न रस मानते हुये यह स्पष्ट करना चाहा है कि नरोत्तमदास सूर की भाँति ही नवीन रस का निर्माण करने के प्रयासी हैं। अब सख्यरस की बानगी भी ले लीजिये—

१– प्रीति में चूक नहीं उनके,
हरि मों मिलिहैं उठि कंठ लगायकै।
द्वार गये कछु दैहैं पैदै हैं,
वे द्वारिका के नाथ जूहैं सब लायकै।

२– ऐसे बेहाल बिवाइन सों,
पग कण्टक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महादुख पायो सखा,
तुम आये इतै न कितै दिन खोये।

देखि सुदामा की दीन दशा,
करुनाकरिकै करुनानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयौ नहिं,
नैनन के जल सों पग धोये ॥ ४२ ॥

इस चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि सुदामा-चरित खण्डकाव्य है क्योंकि प्रायः खण्डकाव्य में एक ही रस का अवलम्ब लिया जाता है।

अगली शर्त इस ग्रंथ में नायक-निर्धारण की है। इस सम्बन्ध में पाठक कुछ असमन्जस में इसलिये पड़ जाता है क्योंकि यदि वह कृष्ण को नायक मानता है, तो 'सुदामाचरित' शीर्षक ही उसे यह छूट नहीं दे सकता परन्तु यदि वह कृष्ण को नायक न मान सुदामा को मानता है तो वह यह भी जानता है कि सुदामा तो केवल दरिद्र व्यक्ति ही है, उनके दरिद्र हर्ता तो ऐश्वर्य-शाली श्रीकृष्ण ही हैं, जो नायक गुणों से सर्वथा परिपूर्ण हैं और इस प्रकार उनको सहनायक मानना उनके अस्तित्व की उपेक्षा करना ही होगा। कृष्ण को नायक मानकर वास्तविक कथा (सुदामा-चरित) को स्वाभाविक रूप से ठेस लगती है। इस प्रकार नायक निर्णय में 'सुदामा-चरित' खण्डकाव्य की कसौटी पर उतना खरा नहीं उतरता, जितना चाहिये।

सुदामाचरित में प्रकृति वर्णन, यात्रा वर्णन तथा अन्य वर्णनों में कवि का मन नहीं के बराबर रमा है। यात्रा वर्णन की नगण्य सी पुष्टि इन अति सीमित छन्दों से हो सकती है—

सिद्धि कियौ गनपति सुमिरि, बांधि दुपटिया खूट।
माँगत खात चले गये, मारग वाली बूट ॥ २५ ॥
तीन दिवस चलि विप्र के, दूखि उठै हैं पाइ।
एकतीर सोए कहूँ, घास पयार बिछाई ॥ २६ ॥

चाहे यात्रा वर्णन की थोड़ी पुष्टि हो भी जाय परन्तु प्रकृति वर्णन की तो शायद नहीं के बराबर भी पुष्टि नहीं होती। यही सुदामाचरित की एक उल्लेखनीय रिक्तता है जिसके कारण खण्डकाव्य मानना कुछ संकोच-युक्त हो जाता है, क्योंकि इन सब वर्णनों का चित्रण खण्ड काव्य में विशेष रूप से होना चाहिये।

'सुदामाचरित' के वर्णन को यदि सूक्ष्मदृष्टि से देखा जाय तो प्रतीत होता है कि इसमें श्रृंगार का स्थूल वर्णन यत्किंचित भी नहीं है। सर्वत्र विशुद्ध भावात्मकता का समुद्र दृष्टिगत होता है। यह ग्रंथ की उत्कृष्टता का सटीक उदाहरण है।

यद्यपि कलाप्रिय पाठक अपनी तृप्ति सुदामाचरित में नहीं देख पाता फिर भी इसमें उपरि–विवेचित भावों की गहनता तथा मार्मिकता अत्यंत प्रभावोत्पादक है। कहीं-कहीं तो ऐसा सूक्ष्म चित्रण किया गया है कि पाठक के नेत्रों के सम्मुख परिस्थिति का चित्र सा उतरता चला जाता है। सुदामा की दरिद्रता का वर्णन इन्ही दो एक स्थलों में से है –:

कोदों सवाँ जुरतो भरि पेट तो,
चाहति न दधि दूध मिठौती।
सीत बितीत भयो सि सियातही,
हों हठिकै तुम्हें न पठौती।
औ तुमको न मिली दुपटी प्रिय,
मोंहि मिली कबहूँ न डेठौती।
या घरतै न गयो कबहूँ प्रिय,
टूटो तवौ अरु फूटी कठौती ॥ १२ ॥

इस परिप्रेक्ष्य में मैं एक छन्द का भी उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे सम्पादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने मूल अंश मानने में हिचकिचाहट प्रकट की है परन्तु कई विद्वान उसे भी सुदामाचरित का ही अंश मानते हैं। अपनी स्वाभाविकता के कारण इसे मूल अंश मानने को विवश सा होना ही पड़ता है। यथा–

फूटी एक थारी बिन टोरनी की झारी हुती,
बांस की पिटारी औ कँथारी हुती काठ की।
बेटे बिन छुरी औ कमंडलु सो टूक वहौ,
फटे हुते पावौ पाटी टूटी एक खाट की।
पथरौटा काठ को कठौता कहूँ दीसै नाहिं,
पीतर को लोटा हो कटोरा हो न बाटकी।
कामरी फटी सी हुती डोड़न की माला ताक,
गोमती की माटी की न सुद्ध कहूँ माटकी ॥५४॥

इसी प्रकार सुदामा तथा सुबुद्धि के मध्य विवाद का ऐसा चित्र उकेरा गया है कि वह स्वाभाविकता का प्रतिरूप ही हो जाता है इस प्रकार पूरे विवेचन को ध्यान में रखते हुये अपनी स्पष्टता, भावुकता, नवीनता तथा भाव्यात्मकता के आधार पर एक दो लक्षणों का पालन न करते हुये भी 'सुदामाचरित' को खण्ड काव्य कहना अतिशयोक्ति न होकर सर्वथा उपयुक्त ही होगा।

———

बच्चों को शिक्षा देना समाज के अपने ही हित में है । जन्म से मानव पशुवत् पैदा होता है । शिक्षा और संस्कार से वह समाज का अभिन्न घटक बनता है । जो काम समाज के अपने हित में हो, उसके लिए शुल्क लिया जाय यह तो उल्टी बात है । कल्पना करें कि कल शिक्षा शुल्क का वहिष्कार करके अथवा उसे देने में असमर्थ होने के कारण बच्चे पढ़ना बन्द कर दें । क्या समाज इस स्थिति को सहन करेगा ? पेड़ लगाने और सींचने के लिए हम पेड़ से पैसा नहीं लेते । हम तो अपनी ओर से पूंजी लगाते हैं और जानते हैं कि पेड़ के फलने पर हमें फल मिलेंगे ही । शिक्षा इसी प्रकार का विनियोजन है ''

—पं० दीन दयाल उपाध्याय

"जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है वह गुरु कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचारित होती है, उसे शिष्य कहते हैं ''

—स्वामी विवेकानन्द

मेरी एलोरा एवं अजंता यात्रा

—सुधीर सिंह 'नवम क'

श्रेष्ठ पुरुषों की अमरवाणी एवं मानव सभ्यता को सदियों, सहस्राब्दियों तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए मानव ने समय-समय पर अनेकानेक उपाय अपनाये हैं, कहीं पर चट्टानों एवं ताम्र लेखों पर खुदे हस्त लेखों द्वारा तो कहीं पर शिला लेखों एवं स्तूपों पर अमर संदेशों की खुदाई करके मानव ने इन्हें आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन हेतु सुरक्षित रखा। इसी श्रृंखला में विश्व-प्रसिद्ध एलोरा और अजन्ता की गुफायें भी है। एलोरा अजन्ता की गुफायें महाराष्ट्र में औरंगाबाद के समीप हैं। 'अजन्ता' और "एलोरा" भी विंध्य पर्वत श्रंखला की पहाड़ियों के अत्यंत रमणीक स्थानों पर स्थित हैं।

'एलोरा' का निर्माण आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो गया था और नवीं शताब्दी तक निर्माण कार्य चलता रहा था। एलोरा की गुफायें 'बौद्ध', 'हिन्दू' और 'जैन' गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

यहां (एलोरा) सर्वप्रथम बौद्ध आये और इन्होंने प्रत्येक स्थानों की भांति यहाँ पर भी अपने निवास स्थल बनाये इनके कुछ ऐसे भी भवन थे जहां शिक्षण का कार्य होता था। वे निवास स्थलों से कुछ भिन्न होते थे। यहां पर उन्होंने एक 'चैत्य' बनाया था जिसे हम उनका पूजा स्थल भी कह सकते हैं। जब हम चैत्य के प्रवेश द्वार से होते हुये अन्दर गये तो देखा कि महात्मा बुद्ध की एक विशाल मूर्ति है। इस 'चैत्य' की छतों में आर्चेज बने थे जो कि भवन निर्माण इंजीनियरी का एक अनुपम उदाहरण था। इसे हजारों वर्ष पूर्व ही भारतीय मूर्तिकारों ने एलोरा में बनाया था। इसकी कला इतनी सुन्दर तथा गूढ़ है कि यह सदैव ही भवन निर्माण अभियंताओं के लिये एक आदर्श होगा।

बौद्धों के पलायन के पश्चात् यहाँ पर हिंदू आये जिन्होंने अपने निवास के लिये बहुत ही स्वच्छ और सुन्दर निवास स्थल बनाये। इनके शिक्षण-कार्य स्थलों को देखने के पश्चात् हम इनके द्वारा बनाये मठों में सबस प्रसिद्ध गुफा और संसार की सबसे विशाल गुफा शिव कैलाश गुफा में गये। इस गुफा में शिव और पार्वती के अनेक युगल चित्र भिन्न-भिन्न भावपूर्ण मुद्राओं में अंकित किये गये हैं। इन युगल चित्रों में शिव पार्वती विवाह सबसे प्रसिद्ध है। इन उल्लेखनीय चित्रों में (पार्वती) विवाह में किस तरह नारी सुलभ लज्जा प्रदर्शित करती है और शंकर किस प्रकार पार्वती की उस स्वाभाविकता को और अधिक बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं, स्वतः हो जाता है। वास्तव में कला इतनी सूक्ष्म है कि प्रत्येक भाव का सर्वथा स्पष्ट चित्रण स्वतः हो जाता है। हम शिव कैलाश गुफा में थोड़ा और आगे बढ़े तो हाथियों की मूर्तियों के ऊपर एक भवन को देखा जिसमें शंकर जी की मूर्ति भी थी। तत्पश्चात और आगे जाने पर एक ओर रामायण की प्रसिद्ध कथायें तो दूसरी ओर महाभारत की विशेष घटानायें चित्र के रूप में प्रकीर्ण थी। ये इतनी सजीव प्रतीत पड़ती थी कि मानो 'रामायण' और 'महाभारत' हमारे ही समक्ष घटित हो रही है।

हिंदू गुफा के पश्चात् जैन गुफाओं की श्रृंखला आती है। इसमें से कुछ गुफायें निवास स्थल के लिये जैनों द्वारा बनायी गयी हैं जो बहुत ही स्वच्छ तथा स्पष्ट है। इन्होंने भी परम्परा की भांति शिक्षण कार्य के लिए भी अनेक गुफायें बनायी। सबसे अंतिम गुफा में जब हम गए तो एक ओर तीर्थंकर महाबीर की मूर्ति निर्मित थी। इसके प्रांगण में एक मठ था, इसमें भी तीर्थंकर महावीर जी की तस्वीर निर्मित थी और इसके बायी ओर एक विशाल हाथी खड़ा है इसे देखने के पश्चात् हम वापस घर लौट आए।

दूसरे दिन हम अजन्ता घूमने गए वहां पर हमने एलोरा की तुलना में कुछ मुख्य भिन्नतायें पायी। एलोरा में चार मंजिली गुफायें भी है। जब कि अजन्ता की गुफायें केवल एक मंजिली ही हैं इसके साथ-साथ एलोरा की गुफाओं में मूर्तियाँ निर्मित हैं तो अजन्ता में सुन्दर चित्रों का अंकन है।

इसी प्रकार यात्रा करते हुए जब हम अजन्ता की गुफाओं में गए तो वहाँ एक ओर बुद्ध की विशाल मूर्ति दीख पड़ी जो बहुत ही सुन्दर थी। इसकी विशेषता है कि यदि इस मूर्ति पर सामने से प्रकाश डाला जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्ध गम्भीर मुद्रा में हैं और यदि बायें से प्रकाश डाला जाय तो वे उदास प्रतीत होते और यदि दायें से प्रकाश डाला जाय तो वे प्रसन्न प्रतीत होते हैं।

हम लोग दीवालों पर बने हुए चित्रों को देखते हुए आगे बढ़ ही रहे थे कि हमें हाथ में कमल लिए बुद्ध दिखाई पड़े। यह चित्र 'पद्मपाणि' के नाम से प्रसिद्ध है। थोड़ा और आगे जाने पर गौतम बुद्ध ऐसे भिक्षुक के रूप में खड़े मिले जो यशोधरा से भिक्षा मांग रहे थे और यशोधरा उनको भिक्षा के रूप में अपने पुत्र राहुल को दे रही थी। इसी प्रकार के विविध चित्रों से दीवालें सजी हुई थीं और छतें भी बहुत अच्छी प्रकार से सजाई गयीं थी हमें छत पर एक बैल दिखा और जब हम उसके चारों ओर घूमे तो हमको लगा कि वह हमको ही मारने आ रहा है। परन्तु जैसे ही हमारी निगाहें जरा सी हटीं तो देखा कि चार हिरनों के धड़ हैं और उनके बीच में एक सिर है एवं वह सिर प्रत्येक हिरन के लिए उपयुक्त है। तत्पश्चात जब हमारा मस्तिष्क छत की ओर आकर्षित हुआ तो देखा कि छत थोड़ा तिरछी है। थोड़ी देर पश्चात् मुझे इसका रहस्य ज्ञात हुआ कि इस छत को ठीक 'चन्दोबा' की तरह झुका दिया गया था।

जहां एक ओर एलोरा अपनी मूर्तिकला और भवन निर्माण इंजीनियरी के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं वहीं दूसरी ओर अजन्ता अपनी चित्र कला एवं ९०० विभिन्न प्रकार की 'हेयर स्टाइलों' के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जापान की 'गीशा गर्ल' जो बहुत स्वच्छ रहती हैं और जापान में जिस घर में गीशा गर्ल अधिक होती हैं वह उतना ही ऊँचा घराना माना जाता है। इनका कार्य आतिथ्य सत्कार करना होता है और उनकी विभिन्न प्रकार की हेयर स्टाइले आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व ही अजन्ता के चित्रों में बन चुकी थी। अजन्ता देखने के बाद दौलता बाद का किला देखते हुए हम घर लौट आये।

"गुरू ही धर्म-पिपासु की आखें खोलने वाले होते हैं। अतः गुरू के साथ हमारा सम्बन्ध ठीक वैसा ही है, जैसा पूर्वज के साथ उसके वंशज का।"

—स्वामी विवेकानन्द

प्रयोगात्मक भौतिक शास्त्र डा० जे० सी०बोस

रमेश कुमार '१० क'

हमारे भारत वर्ष में कई महान् वैज्ञानिक हुए हैं। जिन्होंने भिन्न-भिन्न आविष्कार किये उनमें से ही एक महान वैज्ञानिक हैं डा० जगदीशचन्द्र बोस जिन्होंने भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार में ख्याति प्राप्त की।

जगदीश चन्द्र बोस का जन्म १८९५ ई० में प्रयोगात्मक भौतिकशास्त्री के रूप में इस संसार में हुआ। उन्होंने अंग्रेज वैज्ञानिक रूडयर्ड किपलिंग की एक बात को गलत साबित करते हुए कहा कि पूरब और पश्चिम मिल नहीं सकते। रूडयर्ड किपलिंग ने कल्पना भी नहीं की थी कि कोई 'भारतीय' आधुनिक विज्ञान क्षेत्र को अपनी प्रतिभा से चकित कर देगा।

रेडियों की तरंगों की खोज के क्षेत्र में भी इनका हार्टज के साथ काफी योगदान है। हार्टज के साथ इन्हों ने प्रकाश और विद्युत के गहरे सम्बन्ध का रहस्योद्घाटन भी किया। विशेषतः उन्होंने सिद्ध किया कि छोटी विद्युत-चुम्बकीय लहरें प्रकाश के एक पुंज की तरह व्यवहार करती हैं, दोनों ही परावर्तन व अपवर्तन के नियमों पर चलती हैं। वे विद्युत चुम्बकीय लहरों को ध्रुवित करने में भी सफल हो गये जिससे वे प्रकाश किरणो से उनकी समानता प्रदर्शित कर सके।

बोस जी ने अपने अनेक प्रयोगों के जरिये 'अदृश्य प्रकाश की एक झांकी' प्रस्तुत की। इन यन्त्रों से उन्होंने विद्युत व प्रकाशीय पुंजों की एकता सिद्ध की। इससे उस संचार क्रांति को नई दिशा मिली जो पूर्व के पनडुब्बी केवल तार व टेलीफोन के आविष्कारों के कारण हुई थी।

बोस जी ने अपने आविष्कारों से कभी लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया। बोस जी सम्भवतः अपनी ही दिलचस्पी से भौतिक के प्रयोग करते रहे और यदि उन्होंने यह न छोड़ा होता, तो सम्भवतः अनेक और यन्त्र बनाये होते। लेकिने अपने काम से कोई आर्थिक लाभ उठाये बिना वे एक ऐसा क्षेत्र छोड़ गये जिसमें नये आविष्कारों के लिये बहुत गुंजाइश थी। वे जीव विज्ञान में आ गये।

जीवजन्तुओं से तो उनको बाल्यकाल से ही रुचि थी। वह अपने बाल्यकाल में भिन्नर प्रकार के कीड़े-मकोड़े इकठ्टा करते थे। इसीलिए जीव भौतिकी में प्रवेश किया। वह अपना सारा खाली समय उन्ही की देखभाल में लगाते। यह बड़े आश्चर्य की बात है पशुजीवन से इतना प्यार होते हुए भी, उन्होंने जीव विज्ञान छोड़कर भौतिक का अध्ययन किया क्योंकि कलकत्ता विश्वविद्यालय में उन दिनों जीव विज्ञान की शिक्षा व्यवस्था नहीं थी।

बोस जी ने डाक्टरी में जाना पसन्द किया, क्योंकि जीवित प्राणियों के लिए उनके मन में बड़ा प्रेम था। दुर्भाग्य से लंदन में एक साल तक डॉक्टरी की पड़ाई के बाद उनको इसे त्यागना पड़ा क्योंकि वे एक रोग से कभी-कभी पीड़ित होने लगे जो कि उन्हें आसाम में शिकार करते समय हो गया था।

वस्तुतः बोस इतने अस्पष्ट नहीं थे, जितना उनके आलोचकों ने उन्हें बना रखा था। उन्होंने एक अति सम्वेदनशील यन्त्र क्रस्कोग्राफ का आविष्कार किया, जिससे पौधो की थोड़ी वृद्धि भी एक करोड़ गुना अधिक दर्ज की जा सकती थी। इस प्रकार उन्होंने पौधों की थोड़ी भी वृद्धि को दर्ज कराने का तरीका निकाल लिया। वास्तव में पौधों की वृद्धि इतनी धीमी होती है कि उसकी तुलना यदि केंचुओं की चाल से करें तो वह इससे दो हजार गुना धीमी बैठती है लेकिन बोस जैसा कोई महान वैज्ञानिक अभी पैदा नहीं हुआ।

प्लास्टिक का महत्वपूर्ण योगदान

सञ्जय चक्रवर्ती 'नवम क'

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ही सारे विश्व में व्याप्त है। चारों ओर विज्ञान का महत्व है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं हैं जहां नए अनुसधान या नयी खोज न हो रही हो। प्रत्येक चीज में विज्ञान अपना महत्व-पूर्ण योगदान देता आ रहा है। विज्ञान का एक योगदान प्लास्टिक भी है, जिसका प्रसार, प्रचार और उपयोग हर क्षेत्र में, हर दिशा में हो रहा है।

आज के दैनिक कार्य में प्लास्टिक का महत्वपूर्ण उपयोग दिखाई देता है। प्लास्टिक का महत्व इतना बढ़ गया है कि अभी कुछ ही दिन पूर्व अमेरिका के वैज्ञानिकों ने नई खोज की है जिसमें ज्योतिहीन मनुष्य के लिए प्लास्टिक की पुतलियां लगाई जाने लगी हैं। इस प्रकार इसका महत्वपूर्ण उपयोग होने लगा है। प्लास्टिक की पुतली बनाने में समय अधिक लगता है। प्लास्टिक का उपयोग वर्तमान समय में छोटे से बड़े सभी कार्यों में है।

प्लास्टिक के आविष्कार की भी एक रोचक कथा है। उन्नीसवीं सदी के करीब की बात है कि अमेरिका के एक हाथी दांत के विक्रेता तथा उन्ही दांतों से बनाई गई अनेक वस्तुओं के विक्रेता के पास हाथी दाँत की कमी हो गई, जिसके कारण गेंद, बटन तथा छोटे-मोटे दैनिक कार्यों के लिए वस्तुओं का अभाव हो गया था। इसी लिए हाथी दांत की तरह उपयोगी वस्तु की खोज के लिए दस हजार डालर का पुरस्कार रखा गया। इस समाचार को सुनकर अमेरिका के महान वैज्ञानिक हयार उत्साहित हुए और इस खोज में जी-जान से जुट गए। उन्होंने नाइट्रोसेलूलोज और एल्कोहल के मिश्रण में कपूर मिलाया जो कठोर पदार्थ के रूप में हो गया साथ ही यह भौतिक गुणों में हाथी दाँत से मिलता था। यह जो पदार्थ बना, प्लास्टिक कहलाता है।

प्लास्टिक की खोज से विज्ञान के युग में हलचल पैदा हो गई इसका हर क्षेत्र–कृषि, चिकित्सा, जहाज बनाने और घरेलू कार्य आदि में उपयोग होने लगा। प्लास्टिक के उपयोग के कारण विभिन्न प्रकार के यन्त्र तथा वस्तु बनाई जाने लगीं जैसे :– टेलीफोन, रंग-बिरंगे बटन, खेल की सामग्री, बाल्टी, कंघी, फर्नीचर, प्लेट, हैंडिल, बैग आदि अनेक वस्तुएं जो दैनिक कार्य में प्रयोग होती हैं।

राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के हर क्षेत्र में प्लास्टिक का उपयोग हो रहा है। आजकल उष्मा, विद्युत एवं संक्षारण रोधी होने के कारण लकड़ी, कांच और रबर आदि कई वस्तुओं के साथ प्लास्टिक का सर्वमुखी विकास हो रहा है।

प्लास्टिक का उपयोग और भी बढ़ गया है। विदेशों में कई जगह प्लास्टिक के जहाज बनाये गये हैं जो बहुत ही कम खर्च में बन रहे हैं। इसमें जंग भी नहीं लगता है। प्लास्टिक की कुछ किस्में हैं जिनकी विशेषता है कि यह कार्क से हल्की और लोहे से मजबूत हो जाती है। प्लास्टिक की कुछ विशेष किस्मों से चश्मों के लेंस, फोटो ग्राफिक लेंस आदि यन्त्र बनाये जाते हैं। भवन निर्माण में भी प्लास्टिक का उपयोग दरवाजे एवं खिड़कियों के निर्माण में किया जा रहा है। इन पर दरार व जंग आदि नहीं लगते हैं। यहां तक कि आग का भी प्रभाव नहीं होता है। आज मकान पूरे प्लास्टिक के बनाये जा सकते हैं।

अब तो रेफ्रिजरेटर और फ्रीजर के एक पीस प्लास्टिक बनेंगे जिसकी विशेषता यह होगी कि इनमें धब्बे, खरोच तथा आवाज नहीं होगी। भविष्य में ऐसी सम्भावना है कि प्लास्टिक से जल बनी रोधक पतली परत को

पहनकर मनुष्य समुद्र की गहराइयों में सांस ले सकेगा तथा समुद्र में छिपे रहस्यों को खोज सकेगा।

उद्योग के क्षेत्र में प्लास्टिक लोहे की कमी की पूर्ति कर रहा है। प्लास्टिक के साथ कंक्रीट मिलाने पर यह चौगुना मजबूत हो जाता है। इस प्रकार तैयार कंक्रीट अपघर्षण और अत्यधिक ठंडक से होने वाली हानि के प्रति भी अधिक रोधी होती है। कृषि में सिंचाई के लिए प्लास्टिक के हौज काम में आने लगे हैं। समुद्र के खारे पानी से प्लास्टिक की पतली परत से नमक को पृथक करने की विधि ज्ञात हो चुकी है। जिससे समुद्र का पानी सिंचाई तथा पीने के लिये उपयोगी है।

आज के चिकित्सा क्षेत्र में प्लास्टिक का महत्वपूर्ण योगदान है। प्लास्टिक सर्जरी में यह विद्युत रोधी के रूप में प्रयोग में आता है। आज यह नेत्रहीन को ज्योति देने में सफल हो गई है। वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य प्लास्टिक की थैली नुमा झिल्ली से बने फेफड़े द्वारा सांस ले सकेंगे।

अन्त में हम निःसंकोच कह सकते है कि प्लास्टिक का महत्व हर क्षेत्र, हर दिशा में है। इसका उपयोग बढ़ता ही रहेगा, घटेगा नहीं।

———

"हमें उन संस्थाओं का निर्माण करना होगा जो हमारे अन्दर कर्म-चेतना पैदा करें; हमें स्व-केन्द्रित एवं स्वार्थी बनाने के स्थान पर राष्ट्र सेवी बनावें, अपने बन्धुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण ही नहीं उनके प्रति आत्मीयता और प्रेम पैदा करें। इस प्रकार की संस्थायें ही वास्तव में हमारी चिति का आविष्कार कर सकेंगी।"

—पं० दीनदयाल उपाध्याय

"मन एक भीरू शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है।"

—प्रेमचन्द

"मानव निर्मित भू-उपग्रह"

—अचल कुमार, १० ख

आज मैं आप लोगों को एक नए और रोचक विषय के बारे में बताता हूँ। वह है 'मानव निर्मित भू–उपग्रह'।

हम जानते हैं अपना एक सूर्य है। इसके चारों ओर पृथ्वी तथा अन्य ग्रह चक्कर लगा रहे हैं। वे ग्रह हैं– मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरनेस, प्लूटो, नेप्टयून तथा पृथ्वी। इन सबका समुदाय सौरमण्डल कहा जाता है। ब्रह्माण्ड में ऐसे करोड़ों सूर्य और उनके सूर्य मण्डल हैं। यह तो हो गई ग्रहों की बात। अब हम उपग्रहों के सम्बन्ध में विचार करें।

"हर ग्रह के चारो ओर कुछ और छोटे-छोटे पिण्ड चक्कर काट रहें हैं, उन्हें हम उपग्रह कहते हैं।"

पृथ्वी का एक ही प्राकृतिक उपग्रह है। वह है चन्द्रमा अर्थात चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है। उसी प्रकार मंगल के दो, बृहस्पति के बारह तथा शनि के अनेकों उपग्रह हैं।

यह तो रही प्राकृतिक उपग्रह की बात। अब मानव कृत या कृत्रिम उपग्रहों की बात पर आयें।

सबसे पहले मानव-कृत उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर रूस द्वारा (१९५६) में भेजा गया था। तब से अब तक विभिन्न देशों द्वारा तरह-तरह के लगभग ९०० उपग्रह छोड़े जा चुके हैं।

इन भू–उपग्रह को छोड़ने, बनाने सम्बन्धी विवरण तो अत्यधिक जटिल है और उनका वर्णन यहाँ करना अनावश्यक तथा असम्भव ही है परन्तु इनका जो मूल सिद्धान्त है वह अवश्य समझ लेना चाहिए।

पृथ्वी से हम जितना उपर उठते जायेंगे, किसी वस्तु पर उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रभाव कम होता जायेगा। एक निश्चित दूरी पर उसका प्रभाव नगण्य हो जाता है। उस दूरी पर ले जाकर अगर हम किसी वस्तु को पृथ्वी की कक्षा में ढकेल दें तो एक ऐसी स्थिति आ जाएगी की वह वस्तु पृथ्वी की उस थोड़े से गुरुत्वाकर्षण के कारण न तो पृथ्वी की कक्षा के बाहर छिटक सकेगी और न ही वह पृथ्वी की ओर खिच सकेगी। इस कारण इसका परिणाम यह होगा कि वस्तु अनन्त काल तक पृथ्वी के चारों ओर एक निश्चित कक्षा में चक्कर लगाती रहेगी। इसी सिद्धान्त के आधार पर मानव द्वारा छोड़े गए यह उपग्रह पृथ्वी का चक्कर लगाते रहते हैं।

अब मैं संक्षेप में यह बताऊँगा कि यह कृत्रिम उपग्रह कितने प्रकार के हैं तथा उनका मानव जीवन में क्या उपयोग हैं। उनकी उपयोगिता के आधार पर उनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(१) अन्तर्राष्ट्रीय संचार उपग्रह :–

अमेरिका द्वारा छोड़ा गया 'Telestar' इसका प्रमुख उदाहरण है। इस उपग्रह के द्वारा किसी देश के सुदूर भागों या संसार के विभिन्न देशों के मध्य दूरभाष (Telephone) आदि का प्रसारण आसानी से किया जा सकता है।

(२) खुफिया उपग्रह :—

यह उपग्रह एक देश द्वारा किसी दूसरे देश की सैनिक तैयारियाँ या गतिविधियों का पता लगाने के लिए किया जाता है। जिस देश के उपर से यह खुफिया उपग्रह गुजरता है उसके चित्र लेकर अपने देश को भेजता रहता है। यह चित्र इतने सूक्ष्म और स्पष्ट होते है कि सेना किस और जा रही है' 'उनकी फैक्ट्रियों में क्या-क्या बन रहा है' आदि सब कुछ पता चल जाता है।

(३) **मौसम उपग्रह :—**

यह उपग्रह मौसम के विषय में पूर्व सूचना देता है। इसके द्वारा पहले ही यह मालूम हो जाता है कि तूफानी हवायें किस ओर तथा कितनी तेजी से जा रही हैं। किस हिस्से में सूखा पड़ने की आशंका है तथा किस क्षेत्र में भयंकर वर्षा की।

(४) **भू गर्भ-विज्ञान उपग्रह : —**

यह उपग्रह पृथ्वी की सतह तथा उस पर पायी जाने वाली वनस्पतियों, नदियों, पहाड़ियों आदि की सतह से निकलने वाली 'इन्फ्रारेड' किरणों के गुणों और मात्रा आदि के आधार पर यह पता लगा सकता है कि उस सतह के नीचे किस प्रकार का धातु, खनिज तथा तेल आदि मिलने की सम्भावना है। वह यह भी बता सकता है कि किसी खेत पर कोई बीमारी या कीड़े तो नहीं लग गए हैं। इस प्रकार यह एक बहुत लाभकारी उपग्रह है। इसके द्वारा द्वारा मानव कल्याण के अनेक उपाय किए जा चुके है।

इस प्रकार हम समझ सकते है कि यह मानव द्वारा निर्मित भू उपग्रह मानव की किस-किस प्रकार सेवा कर सकते हैं। साथ ही यह मानव के विनाश का भी कारण बन सकते हैं। इनके द्वारा युद्ध भड़क सकते हैं और इन्ही के खुफिया कारनामों से दुनियां की शांति भंग हो सकती है।

विज्ञान के हर चमत्कार और आविष्कारों की दो धारायें होती हैं। एक धारा से मानव का कल्याण हो सकता तो दूसरी ओर उसका विनाश भी। यह तो उसके प्रयोग करने वाले के ऊपर निर्भर रहता है।

भारत ने भी भू-उपग्रह के छोड़ने में एक कदम आगे बढ़ाया है। भारत ने एक सूक्ष्म उपग्रह छोड़ा है उसका नाम है 'आर्य-भट्ट'।

आकाश में कृत्रिम उपग्रह सूर्यास्त के तुरन्त बाद या सूर्यास्त से कुछ पूर्व आकाश में चमकते हुए चलायमान तारे की भांति देखे जा सकते हैं।

———

'आवश्यकता है कि अपने 'स्व' पर विचार किया जाये। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं, स्वतन्त्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती।"

—पं० दीन दयाल उपाध्याय

प्राकृतिक आभूषण 'बाल'

—'पंकज', दशम क

शरीर पर बालों का पाया जाना स्तनधारियों का प्रमुख लक्षण है। ये शरीर की सुन्दरता लाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार से रक्षा कार्य भी करते हैं। रोचक बात यह है कि अजीवित से प्रतीत होने वाले बाल त्वचा के ही भाग है।

संरचना :—

बालों की रचना उपचर्म से होती है। यह एक प्रकार के अति अघुलनशील प्रोटीन, जिसे 'करोटिन' कहते हैं, से बना है। यह प्रोटीन, एमीनो आम्ल, आर्जनीन, हिस्टाडीन, लाइसीन तथा सिस्टीन के स्थिर अनुपात में उपस्थित रहने से बनता है। बाल को हम मुख्यतया दो भागों में बांटते हैं—

(१) गात्र
(२) जड़

गात्र का अधिकांश भाग त्वचा के ऊपर होता है। जबकि जड़ गात्र के नीचे का एक उभार होता है। कोशिकायें बालों की बाढ़ तथा स्वस्थ रखने के लिये आवश्यक पोषक पदार्थ लाती हैं। बालों का सीधा, घुंघराले, अंडाकार, गोल इत्यादि होना काले-भूरे रंजक द्रव्य 'मेलेनिन' पर निर्भर होता है। बालों का सफेद होना इसी रंजक द्रव्य पर निर्भर करता है।

कार्य :—

शरीर में बाल रक्षण कार्य के साथ ही संवेदन का कार्य भी करते हैं। नथुनों के अन्दर पाये जाने वाले बाल वायु के प्रवेश का नियमन तथा रज के कण पर रोक लगाते है।

गंजापन—

मनुष्यों में गंजेपन का कारण अभी तक वैज्ञानिकों के लिये पहेली बना है किन्तु जहां तक मत है उसके अनुसार यह हार्मोंस की अव्यवस्था के कारण होता है। गंजापन लाल बुखार, टायफाइड आदि कई रोगों का चिन्ह भी हो सकता है [अनुमानित]। कई वैज्ञानिकों का विचार है कि बालों की उचित सफाई तथा देखरेख न करने से भी मनुष्य गंजा हो सकता है।

देख भाल :—

बालों को यथासम्भव साफ करना चाहिये। जिससे रोग नहीं आ पाते। कई वैज्ञानिकों का कहना है कि Market oil [जैसे-ब्रम्ही आंवला] और क्रीम का प्रयोग नहीं करना चाहिये। ये बालों के लिये हानिकारक हैं। बालों की सफाई में सबसे अधिक ध्यान यह रखना चाहिए कि बाल अधिक रूखे अथवा चिकने न रहें।

———

"कथा प्रतियोगिता" (प्रथम स्थान)

—संजय गर्ग 'दशम क'

बहुत दिनों बाद चन्दन आज अपने स्नेह और ममता की मूर्ति मामा के घर आया था। रास्ते भर विचार करता चला आ रहा था कि "कैसे होंगे मेरे मामा जी ? मेरे पहुँचते ही क्या सोचने लगेंगे ? जब उन्हें पता चलेगा कि चन्दन इस समय मास्को जैसे बड़े नगर में एक महत्व-पूर्ण सरकारी पद पर प्रतिष्ठित है तो कैसे उठा लेंगे वे मुझे।" किन्तु.....

ऐसा कुछ हुआ नहीं। सभी कुछ उसकी आशा के विपरीति हुआ। रात ढलने पर जब उसके मामा अपने निजी काम को समाप्त करके घर लौटे तो चन्दन ने अपने मामा के पैर छुये ; लेकिन उन्होंने ग्लानि से भरकर कुछ रूखे मन से 'खुश रहो' भर कह दिया। और चन्दन ..... उस पर तो मानों घड़ों पानी पड़ गया। उसका सोचा हुआ अब उससे कोसों दूर हो गया। किन्तु बुद्धि पर बहुत जोर देते हुये वह पुरानी स्मृतियों में खो गया। उसने सोचा कि 'मेरे मामा जो बचपन से मुझे अगाध स्नेह देते आये हैं, जिन्होंने मेरी हर इच्छा की पूर्ति की है और हर सुख-दुख को समझा है। वे ही मेरे पिता तुल्य मामा मेरे सरकारी पद पर प्रतिष्ठित होते ही क्या से क्या हो गये।' इस उथल-पुथल के साथ वह रात को भोजन किये बिना ही सो गया।

चन्दन के मामा श्री राममोहन जी एक कालेज में अध्यापक हैं। स्वाभिमान, चिन्तन और उत्कट देशभक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी है। चन्दन को उन्होंने पुत्रवत् पाला है ; किन्तु उसके मोह में वे कभी नहीं फँसे। प्रति पग पर उन्होंने उसका मार्ग दर्शन किया है ; किन्तु कुछ ऐसा संयोग कि इन्जीनियरिंग की डिग्री लेने के बाद भारत सरकार ने उसे विदेश जाने की सलाह दी, उसने बिना किसी के परामर्श के प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और इतना ही नहीं वहां (मास्को) जाकर वहां की नागरिकता स्वीकार करके वैभव में डूब गया। भावनायें प्रबल होती हैं और शैशव के संस्कार तो और भी प्रबल। अत: कुछ ही दिनों में वह मामा से मिलने को बेचैन हो उठा और सुबह होते ही चन्दन उठा। शौच स्नान आदि से निवृत होकर जलपान करने बैठा। आज इतवार होने के कारण उसके मामा को भी कालेज नहीं जाना था। वह भी जब शौच स्नान आदि से निवृत्त हो कर जलपान करने बैठे ; किन्तु उनकी चन्दन पर नजर पड़ते ही वह बिना जलपान किये ही उठ कर चल दिये। चन्दन समझ गया और दौड़ कर अपने मामा से लिपट गया। रोते हुए उसने कहा कि-'मुझसे ऐसी कौन सी गलती हो गई जिससे आपने कल से बिल्कुल भी बात नहीं की, जबकि आप मुझे बचपन में कितना स्नेह देते थे।' उसके मामा का दिल पिघल गया उन्होंने उसे गले से लगा लिया और उसको जलपान कराया तथा उन्होंने भी जल-पान किया। उसके बाद चन्दन के मामा ने चन्दन को समझाते हुये कहा कि—"मैंने तुमको बचपन में कितना स्नेह दिया और अब तक तुम्हें देता आ रहा हूँ, तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें बतायी, जिससे तुम देश-हित कोई अच्छा कार्य कर सको। लेकिन तुमने मेरी सारी इच्छाओं पर पानी फेर दिया, मेरी जीवन भर की कमाई को धूल में मिला दिया और तुम सरकारी पद को पाकर सब कुछ भूल गये। तुम एक पैसे और भौतिक ऐश्वर्य में सब कुछ भूल गये। यहां तक कि अपनी जन्म भूमि को भी।" कहते कहते राममोहन जी का गला भर आया। कुछ रुक कर उन्होंने कहा 'चन्दन ! अब मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं रहा। अब तुम अपना काम करो, सुख भोगो। मुझे इसी दशा में अकेले छोड़ दो।' किन्तु चन्दन अपने मामा के एक-एक शब्द से प्रतिक्षण आहत होता जा रहा था, और अन्त में फूट-फूट कर रोने लगा। रोना

पश्चाताप की एक उत्तम स्थिति है। चन्दन के उसी पश्चाताप के आंसुओं में उसके मामा और भी द्रवित हो गये।

अब परिणाम कुछ उल्टा ही हुआ। गम्भीरता और दुःखानुभूति मामा की अपेक्षा चन्दन को अधिक सताने लगी। यथार्थ और आदर्श के अथाह समुद्र में वह गोते लगाने लगा और अन्त में आदर्श की विजय हुई। चंदन ने रूस सरकार को अपना लिखित त्याग पत्र भेज दिया। अब चंदन के जीवन में एक नया मोड़ था। वह इतना खुश था कि उसको मानो संसार का सर्वस्व मिल गया हो। उस दिन से ही उसने वही किया जो उसके मामा ने कहा था। उसके मामा की मेहनत तथा उनकी दी हुई ममता के कारण उसने आज इतना नाम कमा लिया जितना की शायद ही किसी और ने कमाया हो।

———

"जो यह विचार करते हैं कि जहां हम रुक गए थे वहां से लौट करके पुनः चलना आरम्भ करें, वे यह भूल जाते हैं कि लौटकर चलना वांछनीय हो या न हो, असम्भव अवश्य है, क्योंकि समय की गति को पीछे नहीं ले जाया जा सकता।"

—पं० दीन दयाल उपाध्याय

जहां तक शाश्वत सिद्धान्तों तथा स्थाई सत्यों का सम्बन्ध है हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढाल कर हम आगे चलने का विचार करें।"

—पं० दीन दयाल उपाध्याय

"नमक का ऋण"

अरविन्द तिवारी 'नवम क'

राजस्थान में मेवाड़ प्रदेश में सन् १५१८ के लगभग महाराणा सांगा का राज्य था। उस समय देश में मुसलमान अपना आधिपत्य स्थापित करने का भरपूर प्रयत्न कर रहे थे। वे देशी राजाओं को भड़का देते थे और फिर वे राजा आपस में भयंकर युद्ध करते थे।

इसी समय "माण्डवगढ़" के सुलतान 'महमूद खिलजी' द्वितीय ने महाराणा संग्राम सिंह के दुर्ग "गागरौन" को हथियाना चाहा। उसने गुजरात के सुल्तान 'मुजफ्फरशाह' की सहायता से देशी राजाओं को भड़का कर युद्ध छिड़वा दिये थे युद्ध छिड़वाकर वे एक राजा की सेना की मदद करके दूसरे राजा के राज्य को अपने आधिपत्य में ले लेते थे और वे जिस राजा की सहायता करते थे वह तो उसका मित्र हो ही जाता था। इस प्रकार की कूटनीतियों से उन्होंने एक बहुत बड़ी सेना का संगठन करके राणा के दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में राणा की सेना के परम देशभक्त वीरों ने मुसलमानों के छक्के छुड़ा दिये। युद्ध में 'महमूद खिलजी' अत्यन्त गम्भीर रूप से घायल हो गया। राणा ने उसे राजमहल में रखा। एक मास की चिकित्सा के उपरान्त जब वह स्वस्थ्य हुआ, राजा ने ससम्मान उसका राज्य लौटा दिया। महाराणा के इस अत्यन्त नम्र व्यवहार से महाराणा की कीर्ति और अधिक बढ़ गई। सर्वत्र उनकी प्रशंसा हो रही थी। प्रजा में तथा राजमहल में चर्चा का विषय अब यह घटना बन चुकी थी।

मुजफ्फर शाह ने 'ईडर' का हाकिम 'मुबारिजुलमुल्क' को नियुक्त किया था। सदा की भांति 'ईडर' के दरबार में इस घटना की चर्चा हो रही थी। राणा की उदारता को लोग एक दूसरे से बता रहे थे। एक भाट ने राणा के लिये कहा— "महाराणा सांगा के समान उदार चित्त व्यक्ति इस पृथ्वी पर कोई नहीं है, जिसने युद्ध में पराजित शत्रु राजा को ससम्मान उसका राज्य लौटा दिया।" मुसलमान सुलतान की पराजय तथा हिन्दू राजा की प्रशंसा उससे न सहन हो सकी। उसने कहा कि— "संग्राम सिंह में यदि शक्ति है, तो मुझ पर अजमावे।" यह कह कर उसने एक पशु का नाम संग्राम सिंह रख दिया। यह बात शीघ्र ही राणा के दरबार में पहुंच गयी। दरबारी गंभीर होकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। एक दरबारी सैनिक 'डूँगर' जिसने अपने कुटुम्ब के युवकों को सेना में रखा था क्रोध से आग बबूला हो उठा और बोला— "मैंने महाराणा का नमक खाया है, मुझसे अपने स्वामी का अपमान सहन नहीं हो सकता। मुझे आज अपने नमक का ऋण अपमान का प्रतिशोध लेकर चुकाना होगा।" वह सेना लेकर ईडर की ओर चल पड़ा। 'मुबारिजुलमुल्क' को यह ज्ञात हुआ तो उसने मुजफ्फरशाह से सहायता के लिए एक पत्र लिखा। पत्र का उत्तर था— "तुमने राणा का अपमान करके अच्छा नही किया। करनी का फल स्वयं भुगतो।"

'मुबारिजुलमुल्क' डर कर ईडर छोड़कर भाग गया। 'अहमद नगर' के दुर्ग में जहां का द्वार बहुत विशाल तथा जिसमें भाले की नोंके गड़ी थी वहां उसने शरण ली। 'डूंगर' भी अहमद नगर की ओर चल दिया।

दुर्ग के द्वार बन्द थे। सेना ने दुर्ग को घेर लिया। महावतों ने हाथियों को द्वार की ओर बढ़ाया परन्तु भाले की नोक होने के कारण हाथी पीछे की ओर लौट जाते थे। यह उपक्रम देख कर 'डूंगर' क्रोधित हो गया और द्वार की ओर बढ़ा। 'डूंगर' के पुत्र 'कानसिंह' ने यह देखा तो वह भागकर उसके पास आ गया और बोला— पुत्र के रहते पिता बलिवेदी पर नहीं चढ़ सकता है। मेरे रहते

आप वीरगति को नहीं प्राप्त हो सकते। मेरे ऊपर आपका तथा मातृभूमि का ऋण है, मैं उसे पहले अदा करूँगा। यह कह कर वह द्वार पर खड़ा हो गया। महावत किंकर्तव्य विमूढ़ होकर पिता पुत्र को देख रहे थे। यह देख कर कानसिंह ने महावतों से कहा– देखते क्या हो हाथियों को अंकुश मारकर आगे बढ़ाओं, मेरे शरीर पर हाथियो को आने दो। महावतों ने हाथी को बढ़ा दिया। हाथी कि टक्कर लगते ही विशाल द्वारा चरमरा कर टूट गया और रक्त के अलावा और कुछ नहीं दिखाई दिया।

डूँगर की आंखें रोष से लाल हो गई। उसने भीतर 'मुबारिजुलमुल्क' को मौत के घाट उतार दिया। घमासान युद्ध के पश्चात् राजपूतों की विजय हुई। 'डूगर' बुरी तरह घायल हुआ सैनिक उसे ससम्मान उसकी जयजयकार करते हुए राजमहल में ले गए।

इस प्रकार उस राजपूत परिवार ने मातृभूमि के नमक का ऋण अपने आपको होम करते हुए अदा किया।

———

"इच्छा मात्र अविद्या है और उसका नाश ही मोक्ष।"

–योग वशिष्ट

"जब तक कोई हमेशा सत्य न बोले, ईश्वर को नहीं पा सकता क्योंकि ईश्वर सत्य को आत्मा है।"

–रामकृष्ण परमहंस

'वार्षिक आख्या'

—प्राचार्य

इस विद्यालय की स्थापना गुरू पूर्णिमा १८ जुलाई, १९७० को स्वर्गीय पं० दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में इस उद्देश्य से की गयी थी कि श्रेष्ठ भारतीय संस्कार देकर बालकों को राष्ट्र के योग्य नागरिक बनाया जाये। यह विद्यालय उन पब्लिक स्कूलों की कमी को पूरा करने का प्रयास है, जहाँ पढ़ाई का स्तर तो ऊँचा है, पर अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी है तथा अंग्रेजी शिष्टाचार एवं रहन-सहन के अनुकरण पर बल दिया जाता है। इस विद्यालय में भारतीय संस्कारों पर बल देते हुये बालक के उचित चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास तथा पढ़ाई के स्तर को समान वरीयता दी जाती है। यद्यपि अंग्रेजी का पाठ्यक्रम में अनिवार्य स्थान है, परन्तु अध्ययन-अध्यापन का माध्यम मातृ-भाषा हिन्दी ही है। अपना यह विद्यालय ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल की भूमि पर स्थिति है और इस भव्य भवन के निर्माण का पूर्ण श्रेय है, स्वर्गीया श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह को जिन्होंने इसका पूरा व्यय वहन कर अपने निरीक्षण में ही इसको बनवाकर विद्यालय की प्रबन्ध-समिति को हस्तान्तरित किया और इस प्रकार अपने अप्रतिम विद्या-प्रेम का परिचय दिया।

यह विद्यालय कक्षा ६ से प्रारम्भ होकर पिछले ७ वर्षों में प्रगति करता हुआ आज पूर्ण विकसित वैज्ञानिक वर्ग में मान्यता प्राप्त हाई स्कूल के रूप में कार्य कर रहा है। प्रत्येक कक्षा में दो अनुभाग हैं और इस प्रकार विद्यालय के दस अनुभागों में छात्रों की संख्या ३९७ है। इस विद्यालय को शासन के द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी। जिनमें प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी कारण हम कक्षा में निर्धारित संख्या से अधिक छात्र प्रविष्ट नहीं करते।

गत वर्ष से पूर्व १९७५ की हाई स्कूल परीक्षा में हमारा प्रथम ३० छात्रों का दल सम्मिलित हुआ था। इनका परीक्षाफल शत प्रतिशत तो था ही परन्तु विशेषता यह थी कि कोई भी तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं हुआ था। १७ प्रथम श्रेणी में, शेष १३ द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। ४ ससम्मान उत्तीर्ण हुये अर्थात् उनको ७५% या उससे अधिक अंक प्राप्त हुये थे। एक छात्र को पूरे प्रदेश में नवाँ स्थान प्राप्त हुआ।

इसके पश्चात् काल-चक्र कुछ ऐसा घूमा कि सारा देश ही एक विशेष प्रकार के वातावरण में चक्कर लगाने लगा और उसी आपत्तिकाल में अपना यह विद्यालय भी सरकार के कोप का भाजन हुआ। परिणामतः प्रबंध-कारिणी - समिति उन्मूलित कर दी गई। अतिरिक्त जिलाधिकारी को वैतनिक प्रबन्धक नियुक्त किया गया और फिर जो-जो सरकारी विभागों में दशायें होती रही हैं वही दशा अपने इस विद्यालय की भी हुई। सन् १९७६ में कुल ६६ विद्यार्थी हाई-स्कूल की परीक्षा में बैठे, जिनमें २४ प्रथम श्रेणी; ३५ द्वितीय श्रेणी; ३ तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये तथा ४ अनुत्तीर्ण भी हो गये। परिणाम सुनकर बड़ा धक्का लगा; किन्तु उस समय किया ही क्या जा सकता था? इस वर्ष १९७७ की परीक्षा में तीसरी बार ६१ विद्यार्थी बैठे हैं। आशा है कि परिणाम अच्छा रहेगा।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य को मिलाकर १८ है। हमारे सभी आचार्य स्नातक अथवा परास्नातक (Graduates or Post Graduates) हैं। स्नातक अथवा परास्नातकों में भी १ परास्नातक को छोड़कर सभी प्रशिक्षित हैं। इस प्रकार जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं में भी पढ़ाने वाले अध्यापक स्नातक अथवा परास्नातक ही हैं।

शिक्षा-विभाग द्वारा निर्धारित विषयों के अतिरिक्त छात्रों को उनकी विशेष अभिरुचियों के रूप में संगीत चित्रकला, बागवानी आदि का अभ्यास कराया जाता है। संगीत-शिक्षण के लिये हमारे विद्यालय को उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध संगीतकार श्रीमान् एस० एस० बोड्स की सेवायें सुलभ हैं। साधारण विषयों का स्तर ऊँचा रखने के उद्देश्य से हमने कक्षा अष्टम तक केन्द्रीय विद्यालयों के समान राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद (N.C.E R T) द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों को विद्यालय के पाठ्यक्रम में रखा है।

अनुशासन की दृष्टि से सभी बच्चों को एक निर्धारित वेश में ही विद्यालय आना पड़ता है जिसमें ऋतु के साथ परिवर्तन कर दिया जाता है।

सहपाठ्य क्रिया कलाप भी शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग हैं, ऐसा मानते हुए और बच्चों में उत्तरदायित्व तथा प्रजातान्त्रिक भावना से बच्चों की स्वशासित दो संस्थायें बालभारती (कक्षा ८ तक के छात्रों के लिये) एवं किशोर भारती (कक्षा ८ से ऊपर की कक्षाओं हेतु) गठित की गई हैं। उनके तत्वावधान में प्रति शनिवार को बारी-बारी से विभिन्न कार्यक्रम जैसे वाद-विवाद, अन्त्याक्षरी, काव्य-पाठ, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, महापुरुषों की जयन्तियां आदि आयोजित किये जाते हैं। एक 'नीराजन' नामक वार्षिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जो बच्चों की रचनात्मक साहित्य प्रतिभा के विकास में सहायक होती है।

विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य और शारीरिक दृष्टि से उन्हें नियमित व्यायाम, शारीरिक समता (पी० टी०) और योगासन कराये जाते हैं और साथ ही संध्या को प्रतिदिन सभी प्रकार के भारतीय एवं पाश्चात्य खेल जैसे कबड्डी, खो-खो, फुटबाल, हाकी, बैडमिन्टन, बाली-बाल, क्रिकेट, टेबल टेनिस इत्यादि खिलाये जाते हैं। उनके स्वास्थ्य की परीक्षा भी वर्ष में कम से कम दो बार एक चिकित्सक द्वारा की जाती है।

विद्यालय भवन के ऊपरी खण्ड में छात्रावास भी है, जिसमें आज कल ६५ छात्र हैं जिनकी देख-रेख एक मुख्य अधीक्षक तथा तीन सहायक अधीक्षक करते हैं। ये लोग विद्यालय के आचार्य-मण्डल के ही सदस्य हैं, और छात्रावास में ही रहकर बच्चों के अनुशासन, स्वास्थ्य, भोजन, पढ़ाई, व्यायाम आदि की व्यवस्था के लिये उत्तरदायी हैं। आवासीय बच्चों में १२ स्थानीय हैं। शेष ५३ बाहर के हैं जिसमें दो पंजाब के, तीन बिहार के तथा शेष 'उत्तर प्रदेश' के विभिन्न जिलों के हैं। विद्यालय भवन के पीछे विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय का तरण सरोवर है जिसका उपयोग हमारे छात्र भी समय-समय पर करते हैं। पानी की कमी के कारण उसका लाभ अधिक नहीं उठाया जा रहा है। यदि विद्यालय का अपना नलकूप हो तो यह कमी दूर हो सकती है तथा उसके और भी उपयोग हो सकते हैं।

विद्यालय का पुस्तकालय एवं वाचनालय विकास-शील है। उसमें लगभग रु० ८५००/- के मूल्य की लगभग २१०० पुस्तकें हैं। वाचनालय में अवकाश के क्षणों में ज्ञानवर्द्धन हेतु २ दैनिक, ६ साप्ताहिक तथा १२ मासिक पत्र भी आते हैं। प्रतिदिन के मुख्य समाचार भी एक निर्धारित दीवाल-पटल पर लिख दिये जाते हैं।

पाठ्य तथा सहपाठ्य विषयों के अतिरिक्त विद्यालय की समय सारिणी में प्रतिदिन नैतिक शिक्षा अथवा सदाचार का प्रावधान है। प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात् नियमित पढ़ाई प्रारम्भ होने के पूर्व कक्षाचार्य नियमित रूप से कुछ समय बच्चों को सामान्य शिष्टाचार अथवा किसी नैतिक गुण अथवा किसी महापुरुष के जीवन के कोई प्रेरक प्रसंग बताते हैं साथ ही रामायण, गीता के कुछ पूर्व निर्धारित अंश बच्चों को कण्ठस्त कराते हैं। अन्य विषयों की परीक्षा होती है। बच्चों के नैतिक विकास की दृष्टि से प्रत्येक मंगलवार को रामचरित मानस पर प्रवचन होता है। इसके लिये हम पं० हरिशंकर शर्मा, अवकाश प्राप्त अतिरिक्त शिक्षा निदेशक के अत्यन्त आभारी हैं जो लगभग प्रत्येक मंगलवार को अपना अमूल्य समय देकर हमारे छात्रों पर अच्छे संस्कार डालने में हमारी सहायता करते हैं।

प्रतिवर्ष हमारे बच्चे दशहरे की छुट्टी में देशदर्शन के लिये यात्रा भी करते थे, किन्तु इस सत्र के अवकाश में

हमारे बच्चे आपातकालीन परिस्थितियों वश इस महत्व-पूर्ण कार्यक्रम से वंचित रहे। आशा है कि आगामी सत्र में हम पुनः इसे प्रारम्भ कर सकेंगे।

बोर्ड की परीक्षा के अतिरिक्त शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एकीकृत छात्रवृत्ति परीक्षा में भी जिसमें कक्षा ८ के बच्चे बैठते हैं, पिछले वर्ष हमारे ५ छात्र छात्रवृत्ति पाने के अधिकारी घोषित हुये थे। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा संचालित मानस-किशोर परीक्षा में हमारी षष्ठ कक्षा का छात्र प्रदीप कुमार त्रिपाठी सर्व-प्रथम घोषित किया गया। इसी प्रकार केन्द्र सरकार की आवासीय छात्रवृत्ति भी हमारे यहां के दो छात्रों को प्राप्त हुई है। इनमें से एक छात्र चि० वीरेन्द्र सिंह गत सत्र में कालिवन्स कालेज लखनऊ भेजा गया तथा दूसरा चि० संजीव दत्त, राजकुमार कालेज रायपुर (म० प्र०) भेजा गया है। ज्ञातव्य है कि गत दो सत्रों में कानपुर जिले से केवल दो ही छात्र इस छात्रवृत्ति के योग्य घोषित किये गये थे और ये दोनों अपने ही विद्यालय के थे।

हमारे छात्रों के अभिभावकों की बड़ी इच्छा थी कि विद्यालय में इण्टरमीडियेट कक्षायें भी प्रारम्भ की जायें, क्योंकि उनके अनुसार जैसा वातावरण उनके बच्चों को यहां मिलता है वैसा कक्षा १० के पश्चात् अन्य स्थान पर मिलना कठिन ही है। अतः इस दिशा में हमने प्रारम्भिक प्रयास किया अवश्य था किन्तु परिस्थिति की प्रतिकूलता ने हमको उस दिशा में आगे नहीं बढ़ने दिया है। अब हम भविष्य में सब प्रकार अपने इस विद्यालय को प्रगति के सोपानों पर अग्रसर करेंगे, ऐसा विश्वास आपके सक्रिय सहयोग से हम सहज ही कर सकते हैं।

"गुरु लोहार जैसा होना चाहिए जो जन्म-जन्म का मोरचा क्षण भर में छुड़ा दे।"

—कबीर

"भारी भाग्य को सम्हालने के लिये हल्की आत्मा जरूरी है।"

—विनोबा भावे

१९७७ की हाईस्कूल परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले छात्र

अनुक्रमांक	नाम
८११९२६	अभय राज सिंह
२७	अभय कुमार गुप्त
२८	अचल कुमार गुप्त
२९	अखिल त्यागी
३०	अमिट सेठ
३१	आनन्द शर्मा
३२	अनूप रस्तोगी
३३	अनुराग कुमार
३४	अरुण कुमार गोयल
३५	अतुल अवस्थी
३६	अवधेश कुमार ओमर
३७	ब्रजेश कुमार शुक्ल
३८	दीपक श्रीवास्तव
३९	धीरेन्द्र कुमार शुक्ल
४०	दिलीप कुमार चतुर्वेदी
४१	गिरीश चन्द्र शुक्ल
४२	गोविन्द लाल भाटिया
४३	ज्ञान प्रकाश जैन
४४	जगदीश लाल गेरा
४५	कमल चन्द्र
४६	कौशल किशोर भरतिया
४७	महेश चन्द्र तिवारी
४८	मनोज रस्तोगी
४९	मनोज गुप्त
५०	मनोज दमन शुक्ल
५१	मुकेश जैन
५२	मुकेश मिश्र
५३	नरेन्द्र शंकर साठे
५४	नरेन्द्र अग्रवाल
५५	नवीन भार्गव
५६	नवीन सर्राफ

अनुक्रमांक	नाम
८११९५७	नितिन मित्तल
५८	नितिन शंकर साठे
५९	पद्म कुमार
६०	पंकज सिंह
६१	पवन कुमार श्रीवास्तव
६२	प्रदीप कुमार श्रीवास्तव
६३	प्रीत कुमार
६४	राजेन्द्र पाल सिंह
६५	राजीव भाटिया
६६	रमन जैन
६७	रमेश कुमार गुप्त
६८	रवि सामंत
६९	रवीन्द्र नायर
७०	समीर राय चौधरी
७१	संजय गर्ग
७२	संजय मिश्र
७३	संजय टंडन
७४	संजीव कुमार श्रीवास्तव
७५	सुबीर डे
७६	सुनील कुमार गुप्त
७७	विजय कुमार अग्रवाल
७८	विजय कुमार गर्ग
७९	विजय कुमार गुप्त
८०	विजय प्रताप सिंह
८१	विनय अरोड़ा
८२	विनय बंसल
८३	विनय कुमार शुक्ल
८४	वीरेन्द्र पाण्डे
८५	यशवन्त सिंह
८६	योगेश कुमार

अपनी प्रबन्धकारिणी समिति

बैरिस्टर श्री नरेन्द्रजीत सिंह	-	अध्यक्ष
श्री शिव शरण शर्मा	-	उपाध्यक्ष
श्री धीरेन्द्रजीत सिंह	-	मंत्री
डा० जगमोहन [redacted] गर्ग	-	सहमंत्री
श्री राम बालक मिश्र	-	सदस्य
श्री गौरी शंकर भार्गव	-	,,
प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया)	-	,,
श्री भाऊराव देवरस	-	,,
,, लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े	-	,,
,, मधुसूदन वामन मोघे	-	,,
डा० भूषण लाल धूपड़	-	,,
श्री शन्तनु रघुनाथ शेंडे (कार्यवाहक-प्राचार्य)	-	,,
,, प्रयाग सिंह (अध्यापक-प्रतिनिधि)	-	,,
,, आनन्द प्रसाद वर्मा (,,)	-	,,

नीराजन - परिवार :

- सहायक सम्पादक - ज्ञानेन्द्र शर्मा
- छात्र सम्पादक - नवनीत अग्रवाल
- मुखपृष्ठ एवं सज्जा - आनन्द वर्मा
- **सम्पादक - ओमशंकर**
- मुद्रक - भार्गव प्रेस, कानपुर-१